सरस्वती-सिरीज़ नं० १२

मृत्यु-किरण

राजेश्वरप्रसाद सिंह

पहला अध्याय

मृत्यु की रेखा

श्रीगंज के उस मनोरम पहाड़ी प्रदेश में इन्द्रविक्रमसिंह जब से आया है, तब से बराबर दिन भर अपनी बन्दूक लिये हुए इधर-उधर घूमा करता है। शिकार खेलने का उसे बड़ा शौक़ है और शिकार की वहाँ कमी नहीं है। सैर हो जाती है, कोई न कोई शिकार भी हाथ लग जाता है और अच्छा मनोरंजन हो जाता है।

उस इलाक़े की जलवायु बड़ी स्वास्थ्य-वर्धक है। बड़ी सुखद हवाएँ वहाँ बहती रहती हैं, प्रकृति अपने दार्शनिक रूप में दृष्टिगोचर होती है और जीवन शान्त गति से चलता प्रतीत होता है। किन्तु शान्त दिखाई देनेवाला प्रत्येक वातावरण सर्वत्र शान्त नहीं होता।

शरद् ऋतु थी। दिन का तीसरा पहर था। बन्दूक लिये हुए, सिगरेट पीता हुआ, सावधानी से इधर-उधर देखता हुआ, इन्द्र धीरे धीरे एक टेढ़ी-मेढ़ी गली में चला जा रहा था। गली के एक मोड़ पर पहुँचकर अज्ञातभाव से एकाएक वह रुक गया।

गली की इसी मोड़ पर एक छोटा-सा सुन्दर बँगला बना हुआ है। उस बँगले में एक सुन्दर वाटिका है। उस सुरम्य वाटिका

थी। किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि वह मार्ग निर्जीव हो गया था—
भस्म हो गया था। थोड़ी देर तक और गौर करने के बाद ऐसा
मालूम हुआ जैसे कोई वायुयान उधर से निकला हो और कोई
अत्यन्त तीक्ष्ण तेज़ाब छिड़कता चला गया हो।

किन्तु इन्द्र समझ गया कि उसके अन्य अनुमानों की भाँति
उसका यह अनुमान भी गलत है। अभी दस मिनट पहले भी
एक बार वह वहाँ आया था और उस समय वह भूरी रेखा वहाँ
पर नहीं थी। और न किसी वायुयान की घड़घड़ाहट ही उसने
सारे दिन में एक बार भी सुनी थी। कोई हवाई अड्डा वहाँ नहीं
था, और सच तो यह है कि श्रीगंज के ऊपर वायुयान भी बहुत
कम उड़ते दिखाई देते थे। यह विचार भी स्वतः उसके मस्तिष्क
से निकल गया। वह समझ गया कि वायुयान-सम्बन्धी क्षेत्र में
इस विकट रहस्य के भेद की खोज करना बिलकुल बेकार है।

यह बड़ी विचित्र बात थी कि नष्ट हुई चीज़ों की सूरत-शक्ल
ज्यों की त्यों बनी हुई थी किन्तु ज़रा भी छू जाने पर वे
चूर-चूर होकर गिर जाती थीं। इतना ही नहीं, जहाँ वे खड़ी थीं
उस स्थान की ज़मीन भी बिलकुल नष्ट हो गई थी। और इस
समस्त प्रदेश की भूमि ऐसी-वैसी नहीं, बड़ी सुदृढ़ थी। फिर भी
वह भूमि बिलकुल कोमल और भुरभुरी हो गई थी। ऐसा जान
पड़ता था, मानो वे समस्त तत्त्व ही जिनसे उसकी सृष्टि हुई थी
सर्वथा नष्ट हो गये हों। बिना ज़रा भी ज़ोर लगाये इन्द्र घुटने
तक अपना पैर उसमें धँसा सकता था।

आगे बढ़कर, झाड़ी के समीप जाकर उसने उसकी टहनी
पकड़ी। उस स्थान की पत्तियाँ और टहनियाँ, जहाँ उसने
छुआ था चूर-चूर होकर गिर गईं। उसने उसे पकड़कर ज़ोर से
हिलाया और एक बार की चोट से वह सारी बेल टूटकर
गिर गई। एक साथ, सैकड़ों हज़ार नाड़ियों से उस घनी

स्थान में उस समय मौजूद था, और वह था स्वयं इन्द्र। फिर भी सहसा, बिना किसी स्पष्ट कारण के, वह बड़ी-सी चिड़िया मरकर गिर पड़ी थी। गिरते समय उसने कोई आवाज़ नहीं की थी; लेकिन जब वह ज़मीन से करीब सौ फुट रह गई थी तब उसके पर निर्जीव शरीर से अलग हो-होकर हवा में फड़फड़ाने लगे थे।

जब वह झपटकर उसके समीप पहुँचा था, तब उसमें भी उसे वैसे ही लक्षण दृष्टिगोचर हुए थे जैसे उस मृत्यु-रेखा से नष्ट हुई अन्य वस्तुओं में विद्यमान थे। केवल पर ही नहीं, मांस और हड्डियाँ भी नष्ट होने लग गई थीं। उस बेचारे पक्षी का सारा शरीर राख हुआ जा रहा था। आश्चर्य के आधिक्य से वह हैरान हो उठा था।

उसके बाद भेड़ोंवाली घटना घटी थी। सत्ताईस भेड़ें एक दिन एकाएक धुएँ की तरह उड़ गई थीं। वे अदृश्य हो गई थीं, और कारण का ज़रा भी पता न था। इस घटना के घटने में केवल पांच मिनट लगे थे। गड़रिया झोपड़े के अन्दर गया था और तुरन्त बाहर निकलकर उसने देखा था कि न जाने कैसे सारी भेड़ें गायब हो गईं। उसने कसम खाकर बतलाया था कि केवल पांच मिनट के लिए वह अन्दर गया था। उसका कुत्ता भी उसके पीछे-पीछे अन्दर चला गया था। यह देखकर उसने उसे फिर बाहर भगा दिया था। कुत्ते को बाहर भेजने के शायद केवल एक मिनट बाद ही उसे ज्ञान हो गया था कि सारी की सारी भेड़ें एकाएक गायब हो गई हैं। सारा स्थान खाली पड़ा था। केवल वह कुत्ता भयभीत होकर इधर से उधर दौड़ता व भौंकता फिर रहा था।

सारा मैदान छान डाला गया। पास-पड़ोस के इंच-इंच से वह गड़रिया परिचित था। उसने स्वयं जा-जाकर इंच-इंच

-सी झलमलाती हुई किरण-राशि की भाँति अस्पष्ट रूप में न जाने कब से उसके असन्तुष्ट मन में वह विद्यमान थी। उसके सामने उसके जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण समय आ पहुँचा था।

इन्द्र तीस वर्ष का हो चुका था, किन्तु अभी तक वह विवाह बन्धन से दूर भाग रहा था। उस प्रश्न के प्रति उसके मन में गहन उदासीनता थी। उसकी उस उदासीनता का कारण दूसरे नहीं समझ पाते थे।

इँगलैण्ड में यथेष्ट समय तक उसने शिक्षा प्राप्त की थी। क्रिकेट और टेनिस के खेलों में वह दक्ष था, घुड़सवारी में उसने ऐसी योग्यता प्रदर्शित की थी कि स्वयं उसके शिक्षक को भी हैरत हुई थी, और वह बड़ा पक्का निशानेबाज था। गत विश्वव्यापी महायुद्ध में भी सम्मिलित होकर उसने अपने वीरत्व का परिचय दिया था। और युद्ध के बाद सारे संसार में उसने विस्तृत भ्रमण किया था। किन्तु ये सारी बातें अब उसके लिए महत्त्वहीन हो चुकी थीं।

वह इन्द्र जो रंगरूट की उस गली में उस दिन घुस गया था, अब पहले जैसा बेफिक्र, स्वतन्त्र, मौजी इन्द्र नहीं था। वह अनुभव कर रहा था कि वह बहुत कुछ बदल गया है। संसार के आघातों ने, जीवन के विस्तृत अनुभव ने उसे कठोर, गम्भीर और चिन्ताशील बना दिया था। अमीर होना बहुत अच्छा है, किन्तु अमीरों का सारा वैभव पूर्णतया कष्टहीन भी नहीं होता। उनके लिए भी विशेष प्रकार की समस्याएँ हैं। एक बड़ी जमींदारी का वह एकमात्र अधिकारी है, बैंक में भी उसके लाखों रुपये जमा हैं। लेकिन वह अविवाहित है। और यही अविवाहित होना उसके लिए आफत है, बला है, मुसीबत है।

कई वर्षों से वह उन महानुभावों से बचने की कोशिश कर रहा है जो उसे किसी न किसी तरह विवाह के बन्धन में जकड़

वास्तव में बात यह नहीं थी। वह स्त्री-कण्ठ से निकली हुई बड़ी कोमल, बड़ी सुरीली, बड़ी मीठी आवाज थी। इन्द्र पूरी तरह परास्त हो गया।

जो उसने कहा था, वह था—नमस्कार! क्षमा कीजिए मैं सुन नहीं पाई। आपने क्या कहा था?

"मुझे शान्ति मिली यह सुनकर," इन्द्र ने मुस्कराकर कहा। "बड़ा सुन्दर समय है, उससे हजार गुना अधिक सुन्दर, जितना अभी एक मिनट पहले था।"

"बड़ी अच्छी बात आपने कही है। लेकिन यह तो बताइए, हार्डी कहाँ है?"

इन्द्र को आश्चर्य हुआ।

"हार्डी! उससे आप परिचित हैं क्या? आपको कैसे मालूम हुआ कि वह कुत्ता मेरा ही है?"

वह हँस पड़ी।

"हार्डी से मेरी बड़ी गहरी दोस्ती है। मैंने आपके साथ उसे अक्सर देखा है। अक्सर जब आप शिकार की खोज में इधर-उधर चक्कर लगाते फिरते हैं, तब कुछ फ़ासला रखकर यह आपके पीछे लगा रहता है। कभी-कभी यह यहाँ आता है, और बड़ी बेतकल्लुफ़ी से हड्डियाँ चबाता है। मुझे यह बहुत अच्छा लगता है।"

"यह बड़ी अजीब बात है कि आपको मैंने पहले कभी नहीं देखा। क्या आप यहाँ रह रही हैं?"

"वर्षों से। मेरा यह स्थायी घर है।"

"यह तो और भी ताज्जुब की बात है। मेरा ख़याल था कि मेरी नज़र बड़ी तेज़ है! विश्वास कीजिए, कभी आपकी एक झलक भी मैंने नहीं देखी। किसी को आते देखती हैं तो क्या आप छिप जाती हैं?"

और भेदभरी बातें थीं कि मेरी दिलचस्पी जाग्रत हो गई।"
उसकी दृष्टि एक क्षण के लिए उस मृत्यु-रेखा की ओर चली गई।

"तब तो शायद आप यहाँ अधिक समय तक न ठहरेंगे?" बड़ी सरलता से उसने कहा।

"अधिक समय तक ठहरने का इरादा तो नहीं था," उसकी आँखों में दृष्टि गाड़कर इन्द्र ने कहा: "लेकिन अब सारी बातों पर विचार कर लेने के बाद मैंने निश्चय कर लिया है कि यहाँ तब तक रुकूँगा ..."

"कब तक?"

"जब तक आपके पड़ोस में रहने से मेरी तबीयत न ऊब जायगी। यह बँगला आपका ही है न?"

"हाँ। कभी-कभी मैं यहाँ रहती हूँ।"

"हमेशा नहीं रहती?"

वह फिर हँस पड़ी।

"आपका हौसला अब बढ़ने लगा है" शरारत से मुस्कराते हुए उसने कहा। "ऐसी बातें अब आप पूछने लगे हैं जो एक शिकारी को न पूछनी चाहिए। मेरा ख्याल है कि अब ज़रूरत इस बात की है कि आप अपना ध्यान किसी दूसरी बात की तरफ़ लगायें। इसलिए यदि अब कृपा करके आप जेब से सिगरेट निकालकर जलायें, तो बहुत अच्छा हो।"

इन्द्र हँस पड़ा।

"आपकी सलाह मुझे मञ्जूर है।" मुस्कराते हुए उसने कहा।

एक मिनट के बाद फाटक से लगे हुए चबूतरे पर बैठा हुआ वह बड़ी निश्चिन्तता से सिगरेट पी रहा था और वह चन्दन की तरह उस छोटे-से फाटक पर झुकी हुई खड़ी थी।

इन्द्र ने देखा कि उसके पैर छोटे-छोटे और बहुत सुन्दर हैं। और यह भी उसने देखा कि वह सुनहरी रंग की रेशमी साड़ी

के मामले में हमेशा इसी तरह गड़बड़-झाला कर बैठते हो। देखते नहीं कि मामला क्या है? अब समझे?"

"मुझे बड़ा खेद है," खेदपूर्ण स्वर में इन्द्र ने कहा। "मैं नहीं समझता था कि मैं अनधिकार चेष्टा कर रहा हूँ। मुझे क्षमा करो रजनी!"

"कृपया क्षमा न माँगिए।" दुखपूर्ण स्वर में उसने कहा, "मेरा सारा हाल आपको ठाकुर साहब से मालूम हो जायगा। ठाकुर साहब मेरे सम्बन्ध की कोई बात नहीं छिपायेंगे। विश्वास करिए। और जो कुछ आपको उनसे न मालूम हो सकेगा वह उनकी बेटी से मालूम हो जायगा। बड़ी अच्छी लड़की है अरुणा। उसकी शिक्षा-दीक्षा समाप्त हो चुकी है। कल वह बम्बई से वापस आवेगी। मुझे आशा है, उसे पसन्द करोगे इन्द्र! परेशानी में पड़ जाओगे, अगर उसे पसन्द न कर सकोगे। है न यही बात?"

इन्द्र घूमकर उसकी ओर एकटक देखने लगा। देर तक वह उसे उसी तरह देखता रह गया।

"नहीं, ऐसी बात नहीं हो सकेगी रजनी।" अन्त में निश्चयात्मक स्वर में उसने कहा, "मैं बाध्य नहीं हूँ उसे पसन्द करने को। जहाँ तक मैं जानता हूँ अरुणा से आज तक कभी मेरी मुलाकात नहीं हुई। और विश्वास करो रजनी! उसकी उपस्थिति मेरे ऊपर कुछ भी प्रभाव न डाल सकेगी। क्या मैं जान सकता हूँ कि उसकी चर्चा तुमने क्यों छेड़ी है?"

"ज़रूर जान सकते हो, इन्द्र। मुझे बतलाने में कोई आपत्ति नहीं है। बात यह है कि स्त्रियों का दृष्टिकोण स्त्रियों के प्रति उदार नहीं होता। फिर अरुणा राठौर भी [illegible] नहीं है। अपने चारों ओर दृष्टि दौड़ाओ। इन लड़कियों के ढेर में [illegible]

री ही बात ठीक निकलेगी। ख़ैर, अब मैं अन्दर जाऊँगी। र्दी लग रही है।"

इन्द्र उठ खड़ा हुआ।

"मैं नहीं जानता, रजनी! कि अभी मुझे क्या जानना बाक़ी । लेकिन चाहे जो कुछ सुनने को मिले, मैं इसी समय बिना ज़रा भी हिचक के कह सकता हूँ कि तुमसे भेंट करने में मुझे दैव अपार प्रसन्नता होगी। कल तुमसे भेंट हो सकेगी?"

"अगर भेंट करना ही चाहोगे, तो हो सकेगी।"

"तो कल चार बजे फिर इसी स्थान पर मैं आऊँगा। मुझे ड़ा दुःख होगा, बड़ी निराशा होगी अगर उस समय तुम यहाँ । मिलोगी।"

इन्द्र ने अपना हाथ धीरे से उसके हाथ पर रख दिया। जनी ने मुस्कराने की कोशिश की, लेकिन उसका प्रयास सफल नहीं हो सका। वह मुड़कर बँगले की ओर बढ़ी।

"सुनो तो रजनी!" इन्द्र ने कहा। "इस गली का नाम क्या है?"

"मिलन-कुञ्ज!" रुककर, मुख मोड़कर रजनी ने उत्तर दिया। और फिर वह तेज़ी से चली गई।

वह मन्त्रमुग्ध दृष्टि से उसकी ओर, जब तक वह दिखाई देती रही, देखता रहा। फिर एक दीर्घ-निःश्वास खींचकर घर की ओर चल पड़ा। उसके मन में विभिन्न भावनाओं का एक तूफ़ान-सा उठा हुआ था। और उसका उद्वेलित हृदय एक विचित्र, मधुर, कटु पीड़ा के भार से भारी हुआ जा रहा था। उसकी पूर्वसंचित धारणायें ढेर हुई जा रही थीं और उसके हृदय में नवीन धारणाओं की सृष्टि हो रही थी। गली पीछे छूट गई। वह उस कच्चे चौड़े रास्ते पर पहुँच गया जिसे सड़क कहा जाता था।

तीसरा अध्याय

दो कारण

रायबहादुर ठाकुर रामेन्द्रप्रतापसिंह राठौर योरपीय सभ्यता-रंग में पूरी तरह रंगे हुए थे। अनेक वर्षों तक वे योरप और अमेरिका में भ्रमण और निवास कर चुके थे। वे योरपीय ढंग से रहते थे, योरपीय तथा भारतीय दोनों प्रकार के भोज्य पदार्थ सेवन करते थे। एक बहुत बड़े इलाक़े के वे एकमात्र स्वामी थे। धन की उन्हें कोई कमी नहीं थी। रहने के लिए रामेन्द्र-भवन सा सुन्दर, विशाल भवन था। सेवा के लिए सेवकों की एक छोटी-सी पलटन। वस्त्र आपके लन्दन और पेरिस से सिलकर आते थे, भोजन के पदार्थ कलकत्ता और बम्बई से। [illegible] ऐसे जंगल में भी उनके लिए सदैव मंगल बना रहता था। किन्तु इधर कुछ दिनों से वे कुछ विकल-से दिखाई देने लगे थे। कारण किसी को ज्ञात नहीं था।

रामेन्द्र-भवन का निर्माण उन्होंने विदेश से लौटने के बाद कराया था। उसके निर्माण में लाखों रुपये खर्च हुए थे। भवन आधुनिक ठाटबाट से वह पूरी तरह सुसज्जित था। दूर के एक नगर से बिजली का करेंट वहाँ तक लाया गया था। टेलीफोन भी लगा था, तैरने का एक तालाब भी था, ठण्डक और गर्मी पहुँचाने के लिए मशीनें भी थीं। उसकी बनावट बड़ी सुन्दर थी, हर दृष्टिकोण से वह दर्शनीय था। आराम के सारे साधन वहाँ विद्यमान थे—किसी चीज़ की कमी नहीं थी।

रामेन्द्र-भवन का सुसज्जित डाइनिंग-हॉल विद्युत्-प्रकाश से जगमगा रहा था। चमचमाती-दमकती मेज़ के सामने ठाकुर साहब और इन्द्र आराम से बैठे थे। भोजन समाप्त हो चुका था। दीवार में लगी हुई घड़ी ने नौ बजाये। खानसामा [illegible]

...गार की ओर देखते हुए, कमीज में लगी हुई हीरे की
...र उँगलियाँ फेरते हुए वे जरा देर तक कुछ सोचते रहे।

"एक सप्ताह से मैं इस प्रश्न की प्रतीक्षा कर रहा था।"

"यह तो कोई उत्तर नहीं है जनाब!"

"यह स्थान बड़ा रमणीक है। यहाँ की जल-वायु स्वास्...
...क है। शिकार यहाँ जी भरकर खेला जा सकता है।"

"वाह, साहब वाह! आप मुझको बिलकुल बच्चा समझ...
...? यह स्थान बेशक रमणीक है; किन्तु इससे कहीं अधि...
रमणीक स्थान इस देश में भरे पड़े हैं। शिकार खेलने के लि...
मुझे इतनी दूर आने की जरूरत नहीं थी। और मेरा स्वास्थ्य
बहुत अच्छा है। मुझे जलवायु-परिवर्तन की जरा भी आव-
श्यकता नहीं थी।"

ठाकुर साहब ने गला साफ़ किया। फिर वे विचित्र दृष्टि से
...इन्द्र की ओर देखने लगे। वे बड़े रूपवान और तेजस्वी थे।
उनके बाल तो जरूर सफ़ेद हो गये थे; लेकिन उनका शरीर
अभी बलिष्ठ तथा सुगठित था। आत्म-विश्वास, आत्म-
निर्भरता, आन्तरिक शान्ति तथा स्वाभाविक निर्भयता उनके
चेहरे से टपकती थी। उनके वस्त्र उनके शरीर पर खूब
खिलते थे।

अगाध शान्ति, असीम निस्तब्धता का जो सुनिश्चित साम्राज्य
उनके उस विशाल भवन के चारों ओर फैला हुआ था, उसी के
वे एक अंग प्रतीत होते थे। वहाँ अपार वैभव था, उस एकान्त में
जिसमें वे रहते थे। फिर भी न जाने क्यों ऐसा भान होता था
मानो किसी अज्ञात अशान्ति की छाया उनके मस्तिष्क में चक्कर
काटती रहती हो और किसी अज्ञात आशंका की अनुभूति
उनके हृदय में जमकर बैठ गई हो। उनका हृदय इन दिनों मानो
इन दोनों अस्वाभाविक भावनाओं ने उलझा कर रखा था।

भीड़ हो, हँसी हो, चुहल हो, रस-रंग हो। वहीं मेरी तबीअत
हो सकेगी, यहाँ तो गिरती ही चली जायेगी।"

"लेकिन अगर मान लीजिए कि मैंने भी यहाँ कुछ विचित्र
देखी हैं तो.."

ठाकुर साहब ने उसकी ओर तेज़ी से देखा और शान्ति की
न ली।

"सच कहते हो? तुमने भी देखी हैं?"

इन्द्र ने सिर हिलाया।

"जी हाँ, शान्त स्वर में उसने कहा। बाहर मैदान में दो-
बड़ी आश्चर्यजनक बातें मैंने भी देखी हैं। मुझे भी उन बातों
चक्कर में डाल दिया था, और मुझे भी सन्देह हुआ था कि सो
हूँ या जाग रहा हूँ, स्वप्न देख रहा हूँ या कोई वास्तविक
ना घट रही है। उन बातों पर आसानी से विश्वास नहीं
ा। स्वभावतः मन में प्रश्न उठता है कि आखिर यह सब हो
ा रहा है, जादू या तिकड़म, दैवी या दानवी अभिनय? अगर
ी ही बातें आपने भी देखी हैं, तो यह सोचकर आप अपने
बिल्कुल परेशान न करें कि आपके दिमाग में कोई गड़बड़ी
हो गई है और आप निर्मूल दुष्कल्पनायें करने के आदी हुए
रहे हैं। आपका दिमाग सही है, आपके होश-हवास बिल्कुल
स्त हैं। जो विचित्र, रहस्यपूर्ण घटनायें घटी हैं वे भी बिल्कुल
सच्ची हैं।"

ठाकुर साहब कुछ देर तक निरुत्तर रहे। ऐसा जान पड़ता
मानों वे विरक्त विचारों को अपने मस्तिष्क से दूर करने
चेष्टा कर रहे हों और सोच रहे हों कि अब उन्हें क्या करना
चाहिए?

"इन घटनाओं के सम्बन्ध में आप किस परिणाम पर
पहुँचे हैं, जनाब?" सहसा इन्द्र ने पूछा।

चन्तित और उत्तेजित थे और किंचित् भयभीत भी दिखाई दे
हे थे। उनकी आँखों में विकट विरोध की भावना व्यक्त हो
ई थी और उनका सिर दृढ़ निश्चयसूचक भाव से तन
या था।

इन्द्र ने वार्तालाप का प्रसंग दृढ़तापूर्वक बदल दिया। रजनी
ा सम्बन्ध रखनेवाली ठाकुर साहब की बातें उसके हृदय में
ीर की तरह, तेज छुरी की तरह लगी थीं, लेकिन ठाकुर साहब
ो यह नहीं मालूम हो सका था। इन्द्र के उत्तर की पूर्ण उत्सुकता
े वे प्रतीक्षा कर रहे थे, उसके इस आश्वासन की कि
ह राजेन्द्र भवन में रुका रहेगा और अपने मस्तिष्क और
ाहस से उन भयानक, दुर्भेद्य रहस्यों को हल करने में उनकी
ूरी सहायता करेगा।

"आपने कहा था कि दो कारणों से आपने मुझे यहाँ
ुलाया था," सिगार की राख झाड़कर उसने कहा। "आप यह
ान सकते हैं कि पहला कारण समझ और स्वीकार कर लिया
ाया है। दूसरा कारण क्या है?"

ठाकुर साहब का चेहरा शान्त हो गया। वे जान गये कि
अपने उस युवक मित्र पर भरोसा कर सकते हैं। ऐसा ज्ञात
होने लगा मानो उनके कंधों से एक बहुत भारी बोझ उतर
गया हो। उनके चेहरे पर प्रसन्नता का प्रकाश व्यक्त हो गया
और वे शान्तिसूचक भाव से मुस्कराये।

"प्यारे इन्द्र! दूसरा कारण पहले कारण से भी अधिक
आवश्यक और महत्त्वपूर्ण है।"

"जी!"

"मेरी ऐसी धारणा है कि बम्बई में आपत्ति आ रही है। इसका
यही अपनी मान्यता है इन्द्र! और तुम अभी तक अविच-
लित हो।"

यन्त्र का भार मैं तुम्हारे ऊपर छोड़ जाऊँ। यह बात मेरे हृदय में जमी बैठी है। उस दिन मुझे अपार प्रसन्नता होगी जिस दिन मेरा निश्चय पूरा हो सकेगा। सम्भव है कि यह शीघ्र पूरा हो जाय। मेरा ख्याल है कि अरुणा के आगमन के एक सप्ताह बाद ही शायद अनुकूल वातावरण पैदा हो जायेगा।"

"मालूम होता है कल का दिन बड़ा अच्छा होगा," इन्द्र ने ज़ोर देकर कहा।

ठाकुर साहब मुस्कराये।

"आज का दिन कैसा रहा?" उन्होंने पूछा।

"बहुत अच्छा," इन्द्र ने उत्तर दिया। उसके स्वर की दृढ़ता ने ठाकुर साहब को चौंका दिया।

"कितने हाथ लगे?"

"नहीं, एक भी नहीं। कुछ काटने मार लेने से कहीं अधिक सफलता हाथ लगी।"

"किस तरह?"

इन्द्र मुस्कराया।

"एक बात बतलाइए ठाकुर साहब! रजनी-कुटीर में रहने-वाली वह लड़की कौन है?"

ठाकुर साहब सम्भल कर अपनी कुर्सी पर बैठ गये।

"कौन लड़की?"

"माफ कीजिएगा, उसे शायद आपने शैतान की बेटी कहा था।"

ठाकुर साहब के माथे पर बल पड़ गये।

"उससे कहाँ भेंट हुई थी?" दृढ़तापूर्वक उन्होंने पूछा।

"उस सुन्दर वन्नी में जिसे मिलन-कुंज कहते हैं," लापरवाही से इन्द्र ने उत्तर दिया। "आपके सरकार की सम्पत्ति पर जाने का

ते हैं ? उनकी घृणा का कोई न कोई कारण तो अवश्य
गा ?"

"यहाँ रहनेवाले कितने आदमियों ने उससे बातचीत
है ?"

"यह मैं कैसे बतला सकता हूँ ? सम्भव है किसी ने न
। हो ।"

"बिलकुल ठीक । यही है इस दुनिया का ढंग । जिसे चाहा
दनाम कर दिया और उससे घृणा करने लगे, कारण कोई हो
। न हो । किसने उस लड़की को बदनाम किया ? आप नहीं
ानते । मैं नहीं जानता । कोई तीसरा व्यक्ति भी शायद नहीं
ानता । बदनाम तो वह हो ही गई और किसी बात से किसी
ो क्या प्रयोजन है ? माफ कीजिएगा ठाकुर साहब, उसे बदनाम
रने की निम्न क्रिया में आपने भी सहयोग प्रदान किया है, अब
ी कर रहे हैं । सामाजिक ईर्ष्या, द्वेष, संकीर्णता की उसी पुरानी
था की पुनरावृत्ति इस उजड़े जंगली प्रदेश में आज एक बार
फर हो रही है । आप लोगों के बीच वह एक अजनबी है, इसलिए
सी के अतिरिक्त और हो ही क्या सकता है ! वाह, साहब वाह !
खूब है आप लोगों का न्याय ! यह बात आपको कैसे मालूम हुई
क वह बनर्जी के साथ रहती है ?"

"यहाँ का बच्चा-बच्चा यह जानता है बेटा ! रजनी-कुटीर
पर सैकड़ों बार देखा जा चुका है । पक्के तौर पर मैं यह
ात जानता हूँ कि कई वर्षों से यह उस घर में रह रही है । अग-
र वह वहाँ नहीं रहता और इससे [illegible] और भी [illegible]
ो जाती है । कभी-कभी किसी [illegible] ढंग से या महीनों के
[illegible] न जाने कहाँ गायब हो जाता है, [illegible]
[illegible]
[illegible]

"उस बँगले से आप उसे निकाल क्यों नहीं देते ? आपके सामने कौन-सी अड़चन है ? उसके स्वामी तो आप ही हैं।"

"उसके नाम पट्टा लिख चुका हूँ। नहीं, पट्टा वास्तव में बनर्जी नाम है। वह लड़की तो बाद में आकर उस घर में रहने लगी मैं उसे जरूर निकाल देता; अगर निकाल सकता। मुझे उसे निकाल देने में बड़ी खुशी होती। हैं! लैम्पों को यह क्या हुआ रहा है ?" उनकी आवाज तीव्र हो गई और उसमें भय की छाया आ गई।

लाल पर्दों में ढँके हुए वे बल्ब विचित्र हरकतें करने लगे। उनका प्रकाश क्रमशः मन्द पड़ता गया। ऐसा जान पड़ता था मानो उन्हें प्रकाश देनेवाली विद्युत-शक्ति को कोई खींच-खींच र बाहर फेंक रहा हो। उस कमरे की बड़ी-बड़ी खिड़कियों से र के अन्य भाग भी दिखाई देते थे। वहाँ भी ठीक ऐसी ही दशा हुई जा रही थी।

"शायद करेंट फेल हुआ जा रहा है," इन्द्र ने लापरवाही से कहा।

मानो उसके इस कथन का प्रतिवाद करने के लिए ही बल्बों का प्रकाश तेज होने लगा। प्रकाश तीव्र होता गया और उन बल्बों में असाधारण चमक आ गई।

"मेनस्विच खराब हुआ जा रहा है," इन्द्र ने कहा। "तमाम रोशनियाँ अभी एकाएक बुझ जायेंगी।"

लेकिन मेनस्विच का असाधारण [illegible] नष्ट करने में असफल होता जान पड़ा। कई बार रह रह कर तीव्र प्रकाश तीव्रतर, तीव्रतम होता गया, फिर अल्ट्रावायलेट [illegible] में उनका रंग बैंगनी गया। अचानक [illegible] [illegible] [illegible] अनर [illegible] लगा और इन्द्र को ऐसा जान पड़ने लगा मानो उसके [illegible] त्वचा में [illegible] सुन रहा हो। और इसके [illegible]

...ी रक्षक आवरण के अभाव के कारण हलकी रगड़ खाकर
...स्थान-स्थान पर फट गई हो। उँगलियों के छोरों से रक्त की
टपक रही थीं।

"इन्द्र! इन्द्र! क्या मामला है? मेरे हाथ जल रहे हैं! गर्मी
...मारे मैं पागल हुआ जा रहा हूँ। और तुम्हारा चेहरा बिलकुल
...हीन-सा हो गया है।"

बाहर के बड़े हाल से सेवकों की डरी हुई आवाजें आ रही
...। वे अपने कण्ठ-स्वरों को दबाने की कोशिश करते हुए भी
...न पड़ते थे, किन्तु उनके इस प्रयास के कारण उनकी आवाजें
...र भी तीव्र हुई जा रही थीं। वे भयभीत थे और अपने भय
...छिपाने का प्रयत्न भी नहीं कर रहे थे। रामेन्द्र-भवन में कोई
...सा काण्ड हो रहा था जिसे समझ पाना उनके लिए सर्वथा
...सम्भव था। उसे समझने का प्रयास कर सकना भी उनके लिए
...सम्भव हो रहा था। और उनकी यह विवशता अत्यधिक
...आतुरता के रूप में प्रदर्शित हो रही थी।

विशाल सदर दरवाजों के खुलने और कुछ सेवकों के बाहर
...कल भागने की आवाजें आईं। भगदड़ मच गई थी। भागने-
...नों के मन में केवल एक विचार था और वह यह था कि उन
...लसा देनेवाली, [illegible] मारनेवाली भयानक किरणों के प्रभाव-क्षेत्र
किसी तरह बच निकला जाय।

तब एक शान्त, गम्भीर आवाज सुनाई पड़ी। वह [illegible]
...राम की आवाज थी।

"भागो!" उसने कहा—"शान्त हो जाओ। बिलकुल [illegible]
[illegible] मत पैदा करो। [illegible] रामेन्द्र-भवन
काम नहीं चल सकेगा। [illegible]
[illegible]
[illegible] की आज्ञा से [illegible] है।"

इन्द्र तुरन्त एक ऊँची-सी कुर्सी पर चढ़ गया जो एक खिड़की के निकट रक्खी हुई थी। उचककर उसने वह पीतल का डंडा पकड़ लिया जिस पर भारी-भारी परदे टँगे हुए थे। वह काफी मोटा था और करीब बारह फीट लम्बा था। पूरी ताकत लगाकर उसने उसे ज़ोर से खींच लिया और परदे अलग कर दिये। फिर डंडे का एक सिरा उसने उस बड़ी अंगीठी में फँसा दिया जो एक ओर दीवार में बनी हुई थी। डंडे का दूसरा सिरा लैम्पों के झुरमुट के बिलकुल निकट तक पहुँच गया। दोनों के बीच केवल चन्द इञ्चों का फासला रह गया।

एक कुर्सी खींचकर उसने डंडे को सहारा दे दिया और फिर डंडे की एक चोट से उसने एक बल्ब तोड़ दिया। कुर्सी को धक्का दे देने से डंडे का वह सिरा टूटे हुए बल्ब में फँस गया। उसके ऐसा कर देने से विचित्र दशा उत्पन्न हो गई। फड़फड़ाहट बन्द हो गई और प्रकाश की चमक तेज़ होने लगी। चमक इतनी तीव्र हो गई कि लैम्पों की ओर देखने से आँखें दुखती थीं। [illegible] एक-एक करके लैम्प टूटने-फूटने लगे। चिनगारियों और गले हुए शीशे की बौछार-सी फर्श पर गिरने लगी। सारे घर में चटा[illegible]ड़ हो रहा था। सोडा की बोतलों के और न खुलने की-सी आवाज़ बराबर आ रही थी। उष्णता के आधिक्य से, [illegible] पीतल का वह डंडा बिलकुल सुर्ख़ हो गया था।

फिर उन रहस्यपूर्ण किरणों का उपद्रव शान्त होने लगा। हवा [illegible]की होने लगी। और अब केवल [illegible] मकान के किसी [illegible] भाग में किसी बल्ब के टूटने की आवाज़ आ जाती थी। [illegible] तेज़ [illegible]-सी गंध हवा में भरी हुई थी। जो नाक में [illegible] करती थी।

ठाकुर साहब ने उस कुर्सी की पीठ की ओर संकेत किया [illegible] पर वह डंडा टिका रक्खा था। उसने [illegible] के बराबर कुर्सी

"ठीक कहते हो इन्द्र !"

असीम विवशता से वे इधर-उधर दृष्टि दौड़ाने लगे। इस नये प्रदर्शन ने उन्हें पूरी तरह परेशान कर दिया था। वे समझ नहीं पा रहे थे कि क्या सोचें, क्या करें ? उनकी बुद्धि परास्त हो गई थी।

कालूराम ने स्टैंड मेज के मध्य में रख दिया। फिर सिर झुकाकर वह पीछे हट गया।

"अगर हुजूर की आज्ञा हो," उसने कहा, "तो मैं टेलीफोन से बिजली-घर के अधिकारियों को यहाँ की गड़बड़ी के बारे में इत्तला दे दूँ और उनसे कह दूँ कि जितनी जल्दी हो सके मरम्मत का काम शुरू कर दें ?"

"जरूर कह दो," ठाकुर साहब ने उत्तर दिया। "और देखो कालूराम, उन लोगों से यह भी कहना कि अगर मुमकिन हो तो आज रात को ही यहाँ मरम्मत शुरू कर दी जाय।"

"बेहतर है हुजूर !"

हाँफता काँपता एक दूसरा सेवक अन्दर आया। उसने थर्राये हुए स्वर में बतलाया कि तमाम लैम्पों के बुझ जाने के बाद जब मकान में पूर्ण अन्धकार छा गया तो उसने साफ-साफ देखा कि एक गर्म, चमकती हुई सफेद रेखा भूमि को छूती हुई घर के ऊपर की ओर उठ कर गिर गई।

"यह रेखा कैसी थी—आग की लकीर की तरह ?" आगे बढ़कर इन्द्र ने पूछा। "क्या ऐसा मालूम होता था कि कोई चलता-सा तार एकाएक जल उठा और फिर तुरन्त ही बुझ गया ?"

सम्मतिसूचक भाव से सेवक ने सिर हिलाया।

"बिलकुल ऐसा ही मालूम होता था हुजूर !"

"ठीक है। अच्छा, यह बताओ किस ओर यह देखी गई थी ?"

"आदाब-अर्ज़ जनाब !" अन्यमनस्क भाव से इन्द्र ने कह[ा]

"अच्छा ! कहाँ जा रहे हो ?"

"मैं !" दरवाज़े पर घूमकर इन्द्र बोला। "मैं उस अ[illegible]
हुए नार का पीछा करने, पता लगाने जा रहा हूँ।"

"लेकिन... लेकिन, बेटा, वह तो सीधे रजनी कुटीर क[illegible]
[ओ]र गया है !"

"तो इसमें क्या हुआ ?"

"उस घर में मृत्यु तुम्हारा स्वागत करेगी।"

"मृत्यु नहीं जनाब !—आशा !" शान्त, स्थिर स्वर में इन्द्र ने
[क]हा। "और मैं वहाँ जा रहा हूँ—अभी—अकेले। उस घर का
भेद कितना भी जटिल क्यों न हो, आज रात को उसका पता
लगाकर ही दम लूँगा !"

दरवाज़ा धीरे से बन्द हो गया। उस विशाल ड्राइंग-रूम
[मे]ं ठाकुर साहब अकेले रह गये।

पाँचवाँ अध्याय

घातक आक्रमण

अन्धकार में टटोल-टटोलकर चलता हुआ इन्द्र अपने कमरे
में पहुँचा। इस समय उसे दो चीज़ों की आवश्यकता थी—एक
टॉर्च और दूसरी रिवाल्वर की। पर, अपने टेबल टटोल-टटोलकर
देखने लगा। उसे दोनों चीज़ें थोड़ी देर के बाद मिल गईं।

टॉर्च तो निर्जीव-सी चीज़ थी किन्तु यह रिवाल्वर बेहद
[illegible]पयोगी था। आक्रमण तथा रक्षा दोनों में निश्चित उस पर
निर्भर रहा जा सकता था। उसे हाथ में लेकर वह कुछ क्षणों तक
ध्यान से देखता रहा। फिर [illegible] कहीं [illegible]

रहस्यमय, टेढ़ी-मेढ़ी रेखा चली गई थी। कहीं कहीं थोड़ी थोड़ी मिट्टी से वह ढँक दी गई थी, किन्तु अग्नि की उष्णता इतनी अधिक थी कि तार के जलने के चिह्न मिट्टी के बाहर भी दिखाई दे रहे थे।

ऐसा जान पड़ता था कि तार के लगानेवाले या लगानेवालों ने शायद सोचा था कि काम हो जाने के बाद उसे लपेटकर हटा लेंगे ताकि खोज करनेवाले उसे देख न सकें क्योंकि मैदान में पहुँचने के बाद उसे छिपाने की चेष्टा बिलकुल त्याग दी गई थी। यहाँ वह रेखा बिलकुल स्पष्ट दिखाई दे रही थी। जब अत्यधिक विद्युत-शक्ति से भरा हुआ वह तार जला था तब झाड़ियों की जड़ें भी जल गई थीं।

कुछ क्षणों के लिए चाँद फिर निकल आया। आगे का रास्ता करीब सौ गज तक साफ दिखाई देने लगा। सचमुच वह रेखा ठीक रजनी-कुटीर की ओर चली गई थी। बैटरी की बचत करने के ख्याल से टार्च बुझाकर वह तेजी से आगे बढ़ा।

बहुत दूर आगे, करीब दो मील की दूरी पर प्रकाश की एक नन्हीं-सी शिखा अंधकार के परदे में एकाएक झलमलाने लगी। वह प्रकाश-शिखा रजनी-कुटीर की एक खिड़की के अन्दर नृत्य कर रही थी। ओठ दाबकर वह उस अद्भुत, मनोमुग्धकारी दृश्य की कल्पना करने लगा, जो आज ही सौभाग्यवश उसे देखने को मिला था—वह मधुर, आह्लाद-भरा दृश्य! उसे वह लड़की कितनी अच्छी, कितनी प्यारी लगी थी, उसने उसके हृदय को किस हद तक आन्दोलित कर दिया था! उसे यह कभी भूल नहीं सकता, दुनिया उसके बारे में चाहे जो कहे।

रजनी का चित्र मस्तिष्क से हट गया। उसके स्थान पर लम्बी पोशाकवाले उस अद्भुत, पागल वैज्ञानिक का चित्र उभरा जो उस कमरे में एक कोने से घूमता हुआ आया था और झुक-

निकाल लिया और उसके घोड़े का खटका चढ़ा दिया। उस विकट नीरवता में खटके का वह मद शब्द विचित्र लगा। स्थिर भाव से लेटा हुआ, दम साधे हुए, वह उस व्यक्ति की प्रतीक्षा करने लगा।

वह लंबा, श्याम वस्त्र-धारी, मनहूस व्यक्ति दृष्टिगोचर हुआ—वह जड़, हृदयहीन, अन्तरात्माहीन व्यक्ति ऐसा जान पड़ता था जैसे वह उस भूमि को ही छाप ले रहा हो जिस पर वह चल रहा था, उस वायु को ही दूषित किये दे रहा हो जिसमें वह सांस ले रहा था। किसी चट्टान में खुदी जड़ मूर्ति के चेहरे के समान उसका चेहरा बिलकुल निर्जीव भावहीन-सा प्रतीत होता था। वह पीला, मन्द प्रकाश उसके चेहरे पर एक क्षण के लिए पड़ा। घनी भौंहों के नीचे से उसकी स्थिर, भावहीन आँखें सीधे, एकटक अन्धकार की ओर घूर रही थीं। चुपचाप, समान गति से वह इन्द्र के पास से चला गया। इतने निकट से घनश्री को आज तक किसी ने नहीं देखा था।

इन्द्र उठकर उसका पीछा ही करना चाहता था कि एकाएक उसे किसी दूसरे व्यक्ति की पग-ध्वनि सुनाई देने लगी। घनश्री की चाल से पूरा इत्मीनान टपक रहा था और मालूम होता था कि अपने पैरों के नीचे पड़नेवाली एक-एक इंच भूमि से वह पूरी तरह परिचित है। किन्तु इस दूसरे व्यक्ति की चाल में वह बात नहीं थी। वह झिझकता हुआ, कुछ रुकता हुआ-सा चल रहा था मानो उसे पता ही न हो कि वह कहाँ चल रहा है; मानो उसके मन में आत्म-विश्वास का, निश्चिन्तता का सर्वथा अभाव हो।

घुटनों के बल सावधानी से कुछ उठकर इन्द्र ने गौर से देखा। अन्धकार के पर्दे में एक [illegible] नहीं थी। वह पहचान गया।

"मेरा मित्र है और खुफिया-विभाग का एक बड़ा अफसर। आप उसे पसन्द करेंगे। वह बड़ा साहसी, दृढ़-प्रतिज्ञ और विश्वास करने के योग्य है। इस तरह के काम वह सारी जिन्दगी करता रहा है और प्रेतात्माओं से वह जरा भी नहीं डरता। उस के मन में आप किसी तरह जरा भी घबराहट पैदा नहीं कर सकते। इस मामले को हल करने के लिए उसी तरह के आदमी की जरूरत है।"

"रामेन्द्र-भवन को मैं जासूसों का अखाड़ा बनाना नहीं चाहता", दृढ़ स्वर में ठाकुर साहब ने कहा। यह बात उन्हें पसन्द नहीं आई कि क़ानून इस मामले में हस्तक्षेप करे और उन जटिल रहस्यों के उद्घाटन की चेष्टा करे जिनके प्रभाव-क्षेत्र में रामेन्द्र-भवन भी आगया था।

"रामेन्द्र-भवन का नामोनिशान मिट जाने देने की अपेक्षा जासूसों को बुलाना बेहतर होगा," इन्द्र ने तुरन्त उत्तर दिया, "जो हो, कल सबेरे ही तार देकर मैं टंडन को बुलाऊँगा। मुझे तो जान पड़ता है कि इस मामले में ऐसी सम्भावनायें निहित हैं, जिनकी हम कल्पना भी नहीं कर रहे हैं। बनर्जी मूर्ख नहीं है, केवल मनोरंजन के लिए वह यह सब नहीं कर रहा है। कोई जबरदस्त योजना इसके पीछे है। वह ऐसी शक्तियों से खेल रहा है जिनका हमें कुछ भी ज्ञान नहीं है, किन्तु एक मँजे हुए उस्ताद की तरह वह उनसे पूर्णतया परिचित है। जितनी जल्दी अधिकारियों को हम इन बातों की सूचना दे सकें उतना ही हमारे पक्ष में और न जाने कितने लोगों के हक में अच्छा होगा।"

"टंडन से तुम्हारा परिचय कैसे हुआ?" अप्रसन्न भाव से ठाकुर साहब ने पूछा।

"कितने ही मामलों में मैंने उसकी सहायता की है। [illegible] मनोरंजन के लिए मैं भी जासूसों का काम करता हूँ। इस [illegible]

"मेरा मित्र है और खुफिया-विभाग का एक बड़ा अफसर। आप उसे पसन्द करेंगे। वह बड़ा साहसी, दृढ-प्रतिज्ञ और ऐतबार करने के योग्य है। इस तरह के काम वह सारी जिन्दगी करता रहा है और प्रेतात्माओं से वह ज़रा भी नहीं डरता। टंडन के मन में आप किसी तरह ज़रा भी घबराहट पैदा नहीं कर सकते। इस मामले को हल करने के लिए इसी तरह के आदमी की जरूरत है।"

"रामेन्द्र-भवन को मैं जासूसों का अखाड़ा बनाना नहीं चाहता", दृढ़ स्वर में ठाकुर साहब ने कहा। यह बात उन्हें पसन्द नहीं आई कि कानून इस मामले में हस्तक्षेप करे और उन जटिल रहस्यों के उद्घाटन की चेष्टा करे जिनके प्रभाव-क्षेत्र में रामेन्द्र-भवन भी आगया था।

"रामेन्द्र-भवन का नामोनिशान मिट जाने देने की अपेक्षा जासूसों को बुलाना बेहतर होगा," इन्द्र ने तुरन्त उत्तर दिया, "जो हो, कल सवेरे ही तार देकर मैं टंडन को बुलाऊँगा। मुझे तो जान पड़ता है कि इस मामले में ऐसी सम्भावनायें निहित हैं, जिनकी हम कल्पना भी नहीं कर रहे हैं। बनर्जी मूर्ख नहीं है, केवल मनोरंजन के लिए वह यह सब नहीं कर रहा है। कोई जबरदस्त योजना इसके पीछे है। वह ऐसी शक्तियों से खेल रहा है जिनका हमें कुछ भी ज्ञान नहीं है, किन्तु एक मंजे हुए उस्ताद की तरह वह उनसे पूर्णतया परिचित है। जितनी जल्दी अधिकारियों को हम इन बातों की सूचना दें सकें उतना ही हमारे हक में और न जाने कितने लोगों के हक में अच्छा होगा।"

"टंडन से तुम्हारा परिचय कैसे हुआ?" परम्परागत भाव से ठाकुर साहब ने पूछा।

"कितने ही मामलों में मैंने उसकी सहायता की है। अपने मनोरंजन के लिए मैं भी जासूसी का काम करता हूँ। इस तरह

सम्भव है उस कष्टदायक वर्षा ही के कारण उनकी हिम्मत
त हो गई हो। अर्ध-रात्रि का समय आया ही चाहता था।
ाकाश के धुँधले परदे से जल धीरे-धीरे गिर रहा था। झाड़ियों
ार वृक्षों की छायाएँ ऐसी लग रही थीं मानो श्मशान से भूत
ार-उधर खड़े हुए पहरा दे रहे हों। भयानक सन्नाटा चारों ओर
ाया था। इन्द्र को अपने मन में स्वीकार करना पड़ा कि वहाँ
स तरह देर तक खड़ा रहना कोई आसान काम नहीं है।

पानी मे भीगता हुआ वहाँ वह कई मिनट तक और रुका
ा—इस आशा मे कि शायद ठाकुर साहब का कुछ पता लग
ाय। सहसा वह कानों पर जोर देकर सुनने लगा। गली मे
ी पद-ध्वनियाँ आने लगीं। वह तुरन्त ताड़ गया। सन्देह की
ई गुञ्जाइश नहीं रही। बनर्जी घर वापस आ रहा था। साव-
नी की उसे कोई आवश्यकता नहीं थी। अपने पैरों की आवाज़
दाबने की आवश्यकता भी उसे अनुभव नहीं हो रही थी।

सीधे, बिना इधर-उधर देखे हुए वह फाटक में घुसा और
व्यवस्थित गति से बँगले की ओर बढ़ा। न जाने क्यों ऐसा
ीत होता था मानो सात फुट लम्बा, तगड़ा वह मनुष्य संसार
सारे मनुष्यों को अपने सामने भुनगा समझता हो, नीच
समझता हो।

सदर दरवाजा खोलकर इन्द्र मकान के भीतर चला गया।
न दबे-पाँव खिड़की के समीप जाकर वह सावधानी से अन्दर
झाँकने लगा। उसके हृदय में अन्दर का दृश्य देखकर क्रोधाग्नि
भड़क उठी। रजनी बनर्जी के बाहुपाश में तन्मयतापूर्वक, उन्म-
त्तापूर्वक बँधी हुई थी। उसके हाथ बनर्जी के गले में पड़े हुए
और वह उसके सूखे चमड़े से होंठों का चुम्बन कर रही थी।
यही थी वह रजनी जिसने केवल आध घंटे के अन्दर उसे पूर्ण-
या मोह लिया था, जिसे बिना किसी अभिमान दुविधा के उसने

सम्भव है इस कष्टदायक वर्षा ही के कारण उनकी हिम्मत पस्त हो गई हो। अर्ध-रात्रि का समय आया ही चाहता था। आकाश के धुँधले परदे से जल धीरे-धीरे गिर रहा था। झाड़ियाँ और वृक्षों की छायाएँ ऐसी लग रही थीं मानो श्मशान में भूत इधर-उधर खड़े हुए पहरा दे रहे हों। भयानक सन्नाटा चारों ओर छाया था। इन्द्र को अपने मन में स्वीकार करना पड़ा कि वहाँ इस तरह देर तक खड़ा रहना कोई आसान काम नहीं है।

पानी में भीगता हुआ वहाँ वह कई मिनट तक और रुका रहा—इस आशा से कि शायद ठाकुर साहब का कुछ पता लग जाय। सहसा वह कानों पर जोर देकर सुनने लगा। गली में भारी पद-ध्वनियाँ आने लगीं। वह तुरन्त ताड़ गया। सन्देह की कोई गुंजाइश नहीं रही। बनर्जी घर वापस आ रहा था। सावधानी की उसे कोई आवश्यकता नहीं थी। अपने पैरों की आवाज़ को दाबने की आवश्यकता भी उसे अनुभव नहीं हो रही थी।

सीधे, बिना इधर-उधर देखे हुए वह फाटक से घुसा और सुव्यवस्थित गति से बंगले की ओर चला। न जाने क्यों ऐसा प्रतीत होता था मानो काल पुरुष लम्बा, तगड़ा यह मनुष्य संसार के सारे मनुष्यों को अपने सामने भुनगा समझता हो, [illegible] समझता हो।

सदर दरवाज़ा खोलकर इन्द्र मकान के भीतर चला गया। वह दबे-पाँव खिड़की के समीप जाकर बड़ी सावधानी से अन्दर झाँकने लगा। उसके हृदय में अन्दर का दृश्य देखकर [illegible] भड़क उठी। [illegible] बनर्जी के आसपास में [illegible] [illegible] रक्खी हुई थीं। [illegible] में और वह उनके सारे [illegible] का [illegible] कर रही थी। [illegible] थी वह [illegible] जिसने [illegible] [illegible] लिया था, [illegible]

घोट दे। किन्तु मन की इस प्रेरणा को वह दबा रहा था क्योंकि वह जानता था कि क्षणिक आवेश अन्त में हानिकारक ही सिद्ध होता है।

रामेन्द्र-भवन के विशाल हाते में वह कुछ ही दूर घूमा था कि एकाएक सड़क पर पड़ी हुई किसी चीज से टकराकर वह गिर पड़ा। उसका एक घुटना बुरी तरह छिल गया।

तुरन्त उठकर वह घुटना सहलाने लगा। सहसा किसी के कराहने की आवाज आई। चौंककर टार्च जलाकर घूमकर उसने देखा कि सड़क पर एक आदमी मुँह के बल पड़ा था। उसके हाथ-पैर बँधे हुए थे और उसके मुख पर एक रूमाल बँधा हुआ था। कीचड़ से उसके वस्त्र बिलकुल सन गये थे, किन्तु वे साफ बतला रहे थे कि वह व्यक्ति कौन है। इन्द्र तुरन्त पहचान गया। वे थे स्वयं ठाकुर साहब।

वे एक मजबूत तार से खूब कसकर बाँधे गये थे, इतना कसकर कि जहाँ-तहाँ उनके शरीर का चमड़ा छिल गया था और खून रिस रहा था। और उनके मुँह में एक गमछा भरा था। उस जगह की जमीन जहाँ उनका सिर टिका हुआ था रक्त से लाल हो गई थी।

इन्द्र की जेब में एक छोटी कैंची थी। उसी की सहायता से तार को पेंचियों से निकाल-निकालकर उसने किसी तरह बंधन खोल डाले और तब ठाकुर साहब को अपनी पीठ पर लादकर वह कोठी की ओर चला।

ठाकुर साहब बेहोश थे। तात्कालिक डाक्टरी सहायता पहुँचाई गई लेकिन बेहोशी किसी तरह दूर नहीं हो सकी। सारी रात बेहोश रहे। वे कुछ भी बतला सकने में असमर्थ थे, इसलिए इस बात का कोई पता नहीं लग सका कि उनकी ऐसी शोचनीय दशा कैसे हुई। टेलीफोन के द्वारा सूचना देकर सिविल

आरम्भ बहुत पहले ही कर चुके थे। उसने अनुभव किया कि उस अवसर का स्वागत वह नहीं कर सकता। किन्तु यह भी उसे स्वीकार करना ही पड़ा कि इस बला से उसकी जान किसी तरह भी नहीं छूट सकती। कठिन समस्या थी।

दो वर्ष से अरुणा को उसने नहीं देखा था। दो वर्ष पहले वह कुछ अजीब-सी लगती थी। उसका शरीर सुगठित नहीं था और सामाजिक नियमों का भी शायद उसे यथेष्ट ज्ञान नहीं था। आत्म-विश्वास का शायद उसके अन्दर अभाव था। किन्तु उसे याद पड़ा कि उसके साथ उसने सदैव बड़ा अच्छा व्यवहार किया था। उसे वह बहुत मानती थी।

अब तो वह शायद सर्वथा दोषरहित, सुशिक्षित और सुसंस्कृत हो गई होगी। विद्या तथा संस्कृति के जिन महान केन्द्रों में रहने का अवसर उसे मिला है उनकी विशेषताओं की छाप उसके व्यक्तित्व पर अवश्य पड़ी होगी। ठाकुर साहब तो उसकी योग्यताओं की सराहना मुक्त-कंठ से करते हैं। वे उसके पिता हैं और अतिशयोक्ति से काम ले सकते हैं, लेकिन यह समझ लेना तो शायद उचित न होगा कि उन्होंने बिलकुल बे-बुनियाद बातें कही हैं। खैर, जो हो, उसका स्वागत तो उसे करना ही पड़ेगा और बेहतर होगा कि वह ऐसा हृदय से करे। गत रात्रि की घटनाओं के बाद ऐसा न करना अन्याय से कम न होगा।

अरुणा को लाने के लिए एक कार तारापुर गई हुई थी। वह अब वापस आयेगी ? अरुणा का स्वागत कर सकने की मन-स्थिति में क्या वह पहुँच चुका था और समझने लगा था कि उस काम में अब उसे विशेष कठिनाई न होगी। ठाकुर साहब की बीमारी का हाल उसे सुनाते समय उसे कुछ सन्तोष, कुछ दिक्कत अनुभव होगी और फिर उसके मन में हलचल मच जायेगी। दूर से किसी मोटर के आने की आवाज आई।

त्र करने का दुस्साहस न करती, अगर परिस्थितियाँ मुझे विवश कर देतीं, पर—"

"अधिक शिष्टाचार की आवश्यकता नहीं," इन्द्र ने कहा। अब तो आ ही गई हो, इसलिए इसके बारे में कुछ कहना-सुनना र्थ है। हाँ, यह मैं जरूर जानना चाहता हूँ कि तुम्हारे यहाँ ने का कारण क्या है?"

रजनी का चेहरा और भी उतर गया। उसे दुःख पहुँचा न्द्र के बात करने के इस ढंग से। उसने उसकी ओर विवशता ी दृष्टि से देखा और फिर वह अपने विचारों को अपने वश में रने का प्रयत्न करने लगी।

"यहाँ क्यों आई हो?" छुरियाँ छिपी थीं इन्द्र के इन ब्दों में।

"तुम्हें चेतावनी देने आई हूँ," विकल स्वर में रजनी ने उत्तर दिया।

"धन्यवाद—अनेक धन्यवाद! लेकिन तुम्हारे उत्तर से बात साफ नहीं हुई। ठीक कहता हूँ न?"

"यहाँ से चले जाओ—तुरन्त चले जाओ। तुम्हारी जिन्दगी तरे में है। तुमसे अनुरोध करती हूँ, विनय करती हूँ, हाथ जोड़- र विनय करती हूँ—कृपा करके यहाँ से चले जाओ। जिस तरह ी उसी तरह इसी समय चले जाओ, सामान साथ में ले ाने के चक्कर में न पड़ो।" ये शब्द उसके मुख से अत्यधिक ेज़ी से निकले। व्यग्रता के आधिक्य के कारण उसके ... होंठ काँप रहे थे और वह अपना रूमाल अपनी उँगलियों पर लपेट ही थी।

"वाह! खूब! अच्छा, अब कृपा करके यह बतलाओ कि तुम्हारी इस असाधारण धृष्टता का वास्तविक अर्थ क्या है..."

फा० ५

"हाँ......हाँ......उसी के बारे में तो तुमसे भेंट करने ई हूँ।"

"अभी तक यह मालूम नहीं हो सका कि यह खेदजनक ना कैसे घटी। बिलकुल रहस्य बनी हुई है यह घटना, और के बारे में किसी बात का भी पता नहीं लग सका है। सिर्फ ना मालूम हो सका है कि अर्ध-रात्रि के समय वे अपने ही के हाते में अध-मरे पड़े पाये गये। उनके हाथ-पैर बँधे हुए और उनके मुख में कपड़ा ठूँसा हुआ था। वे दम तोड रहे । यह सब मैं जानता हूँ क्योंकि मैंने ही उन्हें उस समय उस ा में पाया था।

"इसके डेढ़ घंटे पहले वे तुम्हारी खिड़की के बाहर अन्तिम र देखे गये थे। यह भी मैं जानता हूँ, क्योंकि उस समय वहाँ मैं उनके साथ था। आग के पास एक आरामकुर्सी पर बैठी हुई ा पर रही थीं। ये ही वस्त्र जो तुम उस समय पहने हो उस ाय भी तुम्हारे शरीर पर थे। हाँ, जूतों में फर्क जरूर है। उस ाय तुम भूरे रंग के जूते पहने थीं, इस समय काले रंग के पहने । यह सब ठीक है न? और अब तुम विचित्र-विचित्र ढङ्ग चेतावनियाँ लेकर आई हो और चाहती हो कि अपने प्राणों रक्षा करने के लिए मैं यहाँ से तुरन्त भाग जाऊँ। ऊपर से भी कहती हो कि तुम्हारे ऊपर सन्देह नहीं किया ा सकता!"

भय से आँखें फाड़कर रजनी उनकी ओर देखती रही।

"उफ़! क्या तुम यह समझते हो कि मैंने ही ठाकुर साहब ा स्पर्श किया था?"

"नहीं। और मैं यह भी नहीं समझता कि इस काण्ड में ाग जरा भी हाथ था। लेकिन मैं यह भी कह देना चाहता हूँ तुम्हारे हरकतें ऐसी नहीं हैं कि एक मामूली, अनपढ़ कांस्टे-

रे हो जैसा यहां के लोग मेरे साथ एक मुद्दत से करते आ रहे
। फिर भी मैं चाहती हूँ कि तुम्हारे बारे में जब सोचूँ तब तुम्हारे
सी रूप की कल्पना करूँ जो कल देखने को मिला था—वही
प जो कृपा का सूचक था, सहानुभूति का सूचक था, समझदारी
भरा था। और मैं चाहती हूँ कि इस स्थान से चले जाओ—
स शापग्रस्त स्थान से जितनी दूर जा सको चले जाओ।"

उसके कन्धे पकड़कर इन्द्र ने उसे कुर्सी पर बैठा दिया।

"अब यह अच्छा होगा" शान्त किन्तु दृढ स्वर में इन्द्र ने
हा, "कि हमारी यह बहस किसी तरह समाप्त हो जाय। समय
ता जा रहा है—ऐसा मूल्यवान समय जिसके बीत जाने का
छतावा शायद तुम्हें जीवन भर रहेगा। मैं यह नहीं चाहता कि
म मुझे जानवर समझो या अन्यायी समझो। लेकिन इस
हस्य का पता तो मैं लगाकर ही छोड़ूँगा। अब मैं तुम्हें एक
न्तिम अवसर देता हूँ। थोड़ा-सा विचार करने पर तुम्हें पता
ल जायगा कि अपने लिए तुम कैसी बुरी स्थिति पैदा कर रही
। कल रात को क़रीब दस बजे ठाकुर साहब के साथ मैं रजनी-
टीर के सामने पहुँचा।"

भयभीत दृष्टि से रजनी ने उसकी ओर देखा।

"अच्छा ?"

"रास्ते भर बनर्जी हमारे आगे आगे चल रहा था।"

वह सहम गई। किन्तु इन्द्र ने यह जाहिर किया कि उसका
ध्यान इस बात की ओर नहीं गया।

"धीरे धीरे मैं घर के पीछे की ओर आ रहा था कि मैंने
[illegible] सी आवाज सुनी। शायद किसी के सिर पर आघात
के आने और किसी के ज़ोर से गिरने की सी आवाज थी। मैं
[illegible] की [illegible] कि बात [illegible] नहीं थी, लेकिन मुझे [illegible]
[illegible] था। [illegible] घंटे के बाद मैं फिर आवाज के [illegible] पहुँचा।

यह व्यक्ति बनर्जी है; पर सन्देह से भी उसकी रक्षा तुम नहीं कर सकी। उसका अपराध उसी तरह स्पष्ट है जिस तरह तुम्हारी भावुकता। तुम हार चुकी हो, अब ज़िद से कोई लाभ नहीं।"

सिसकियाँ जारी रहीं। वह कुछ बोल नहीं सकी।

अब इन्द्र ने अपना आखिरी वार करने का निश्चय किया।

"रजनी! मैंने यहाँ बहुतेरी ऐसी बातें देखी हैं जिन पर आसानी से विश्वास नहीं किया जा सकता। एक दिन मैंने देखा कि आसमान में उड़ती हुई एक मुर्गाबी एकाएक बिना किसी स्पष्ट कारण के मरकर गिर पड़ी। गिरते समय उसके परों और मांस की धज्जियाँ उड़ी जा रही थीं। फिर एक दिन मैंने देखा कि तेज़ी से दौड़ता हुआ एक खरगोश अकस्मात मरकर ढेर हो गया।

"मैंने देखी है मरुभूमि के आर-पार खिंची हुई मृत्यु की एक भयानक रेखा—वह रेखा जिसने भूमि के उस भाग को ही नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था जिस पर वह खिंची हुई थी। अब से प्रलयकाल तक उस रेखा पर कभी कोई चीज़ न उगेगी। उसने तो उसके प्राण ही हर लिये, उसका वह जीवन-रस ही नष्ट कर दिया जिस पर पेड़-पौधे पनपते हैं।

"बिजली के तारों के द्वारा फेंकी गई एक नीली किरण के प्रभाव से अपने हाथों का चलना रुकते मैंने इन्हीं आँखों से देखा है। और मैं यह भी जानता हूँ कि ये सब पहले केवल छोटे हैं, साधारण प्रयोग-मात्र हैं और इनसे कहीं अधिक आश्चर्यपूर्ण तथा भयानक घटनायें घटने को हैं।

"इन विनाशकारी घटनाओं की तैयारियाँ जारी हैं। धीरे-धीरे किन्तु निश्चयपूर्वक [illegible] विनाशकारी योजनायें इस मनुष्य-रूपी राक्षस बनर्जी के मस्तिष्क में पूरी हो रही हैं। इस राक्षस की रक्षा करने के ध्यान से तुम्हारी [illegible] भी नष्ट हुई

छोड़ेगा, अगर उसे यह मालूम हो जायेगा कि मैं यहाँ आई हूँ। मुझे मार डालने में उसे उसी तरह संकोच न होगा जिस तरह तुम्हें खत्म कर देने में न होगा।"

सहमतिसूचक भाव से इन्द्र ने सिर हिलाया।

"तो स्वयं बनर्जी ही वह खतरा है जिससे बचने की सलाह तुम मुझे दे रही हो? सचमुच बड़ा भयानक है वह खतरा।"

"हाँ, सचमुच खतरा स्वयं वही है। लेकिन तुम फिर मेरी दिल्लगी उड़ा रहे हो। तुम्हें उसकी शक्ति का ज्ञान नहीं है। बड़ी भयानक है उसकी शक्ति। आज कल मैं सोचती हूँ कि पागल हो जाऊँगी। मेरे चित्त पर जो भयंकर दबाव पड़ रहा है उसे मैं अधिक दिनों तक सह नहीं सकती। कल रात को उसने गुस्सा खाकर कहा था कि अब वह तुम्हारे ऊपर प्रयोग करेगा।"

"बड़ा अच्छा विचार है।"

"कल रात को उसकी योजना में कुछ गड़बड़ी पैदा हो गई थी। उसने सोचा कि वह ठाकुर साहब की करतूत है। बाद में जब वह वापस आया तो उसने देखा कि उसकी एक मशीन बिल्कुल टूटी-फूटी पड़ी है। उस मशीन को तैयार करने में उसने तीन वर्ष लगाये थे। उस मशीन से एक ऐसी शक्ति पैदा होती है जो बिजली ही की तरह एक तार के द्वारा जहाँ जी चाहे भेजी जा सकती है। विज्ञान-जगत में वह एक बिल्कुल नया आविष्कार है—बहुत बड़ी सफलता है।

"किन्तु यह मशीन उसके आविष्कारों में से केवल एक ही है। अन्य मशीनें उससे कहीं अधिक शक्तिशाली हैं, और अधिक भयंकर हैं। इन सबके [illegible] में [illegible] केवल एक [illegible] है। तुमने उसे तोड़ डाला। उसकी [illegible] [illegible] [illegible] क्रोध-[illegible] पागल हो गया। वह जानता है कि [illegible] [illegible] है। ठाकुर साहब के [illegible] [illegible] था। [illegible]

वापस नहीं आ सकेंगे। यह भी तुम नहीं जान पाओगे कि वे कैसे मरे कहाँ लोप हो गये।"

"बस इतना ही तुम्हें कहना था ?"

"हाँ, बहुत ज्यादा बतला चुकी हूँ। आगे कुछ कहने का साहस अब मुझमें नहीं है।"

"बनर्जी मरु-भूमि में कहाँ छिपता है ?"

"यह मैं नहीं जानती," धीरे से उसने उत्तर दिया। इन्द्र समझ गया कि वह सच्ची बात छिपा रही है।

"अगर मैं इस जिले का एक नक्शा ले आऊँ तो क्या तुम उसमें उसके छिपने का स्थान दिखा सकोगी ?"

विवशता और भय के भाव फिर रजनी के चेहरे पर प्रकट हो गये और उसकी आँखें फिर कुछ खोजती-सी कमरे में इधर-उधर दौड़ने लगीं। जरा देर के बाद लड़खड़ाते हुए स्वर में उसने कहा—हाँ...शायद दिखा सकूँगी।

"बस एक सवाल मैं और करना चाहता हूँ। बनर्जी को बचाने की कोशिश तुम क्यों कर रही हो ?"

वह कांप उठी और मुंह मोड़कर दूसरी ओर देखने लगी।

"कोई न कोई कारण तो अवश्य होगा रजनी ?" कोमल स्वर में इन्द्र ने कहा। "मैं समझता हूँ कि वह कारण प्रेम नहीं हो सकता। बनर्जी पागल है। श्रीगंज का प्रत्येक निवासी यह बात जानता है और तुम भी इससे अपरिचित नहीं हो सकतीं। वह पूरा शैतान है और उसके उन्माद-ग्रसित मस्तिष्क में न जाने कैसे-कैसे विचार उत्पन्न होते रहते हैं। फिर भी तुम उसकी रक्षा करने पर तुली हो। तुम इस तरह बातें करती हो जैसे उसका पक्ष लेना है और हमारा विरोध करना। ऐसा तुम क्यों करती हो ? इसका वास्तविक कारण क्या है ?"

टंडन एकटक देखता रहा। वह औसत कद का एक व्यक्ति था, सूट पहनता था, हैट लगाता था। उसके वस्त्रों में तम्बाकू की तेज़ गन्ध निकलती थी। चेहरे, चाल-ढाल और वस्त्रों से रोब टपकता था। चुस्ती उसकी रग-रग में भरी थी।

हर व्यक्ति को वह घूरकर देखता था और उसका इस तरह देखना कभी-कभी असभ्यता के निकट पहुँच जाता था। उसके मतानुसार केवल दो प्रकार के लोग संसार में बसते हैं— सज्जन और बदमाश। सज्जनों से उसे कोई मतलब नहीं था, लेकिन बदमाशों की निगरानी करना वह अपना परम कर्त्तव्य समझता था। उसकी आँखें छोटी-छोटी थीं, जिनमें मुस्कान बड़ी कठिनाई से कभी व्यक्त हो पाती थी। सिर कुछ गंजा हो चला था, मूँछें छोटी-छोटी थीं और आवाज़ बड़ी तेज़ और सख्त थी।

"लंच का समय आ रहा है," इन्द्र ने कहा। "उस समय मैं सारा किस्सा सुनाऊँगा। जिन बातों का पता लगा सका हूँ वह सब भी तुम्हें बता दूँगा। शायद तुम्हें सदर में [illegible] जाने की ज़रूरत पड़ेगी।"

"काम में तो शायद तुम भी लगे हो," टंडन ने कहा।

"तुम्हारा मतलब उस लड़की से है?"

"हाँ। जो कुछ तुमने उससे कहा था वह सब मैंने सुन लिया। जान पड़ता है, इस मामले का तुम्हें अच्छा ज्ञान है; और तुम यह भी अच्छी तरह जानते हो कि यहाँ किस प्रकार [illegible] लग सकता है। यार तुम्हारी पकड़ से कैसे [illegible] [illegible] सहायता मिल सकती है। लेकिन उसने [illegible] धोखा देकर मुझको [illegible] नहीं किया।"

[illegible] होकर विचित्र ढंग से इन्द्र उस [illegible] की ओर देखने लगा।

"अरुणा !" इन्द्र ने तुरन्त आवाज लगाई।

अरुणा दौड़कर रोगी-शय्या के पास आई। उसकी आँखों से आँसू जारी थे और चेहरा बिलकुल भीग गया था।

"अरुणा! तू ही है मेरी अरुणा?"

उसने उनका काँपता हुआ हाथ अपने हाथों में लेकर दबाया। दरवाजा खुला। बर्फ की टोपी लिये हुए डाक्टर अन्दर आया।

"वादा करो, बेटी! तुम जानती हो कि मेरा मतलब क्या है? वादा करो कि तुम इन्द्र की सच्ची संगिनी बनोगी। वादा करो बेटी, वादा करो!"

उनके गले से लिपटकर सिसक-सिसककर अरुणा वादे करने लगी, आश्वासन देने लगी।

इन्द्र ने नेत्रों से इशारा करके डाक्टर को रोक दिया। डाक्टर कुछ न देख सका लेकिन उसने देख लिया कि ठाकुर साहब की आँखों की पुतलियाँ फिर गईं और उनकी उंगलियों की कँपकँपी बन्द हो गई। जीवन-दीपक फड़फड़ाकर बुझ गया। माया-ममता के बन्धन तोड़कर रायबहादुर ठाकुर राजेन्द्रप्रतापसिंह राठौर दुनिया से कूच कर गये।

इन्द्र उसी पाँव कमरे से बाहर निकल गया। डाक्टर और अरुणा को उसी तरह कमरे में छोड़कर धीरे से दरवाजा बन्द करके वह नीचे भागा।

माथे से पसीना पोंछता हुआ वह पुस्तकालय में पहुँचा। [illegible] करुणा [illegible] वेदना से भरा [illegible] जीवन [illegible] हृदय रोने को नहीं मिला था। [illegible] से अधिक नहीं लगते थे। किन्तु वे [illegible]

[illegible] के [illegible] था। [illegible] फिर उसके चेहरे पर [illegible] था। [illegible]

समय उसने रजनी से जो शब्द कहे थे वे अब भी उसे
की तरह याद थे—"मैं जरूर आऊँगा, रजनी—और मुझे
निराशा होगी अगर तुम यहाँ न मिलोगी।" कितना सुन्दर
वह क्षण! उसकी आत्मा अनिर्वचनीय आनन्द में विभोर
गई थी और उसके हृदय के तार स्वर्गिक सगीत की नीरव
रियों से झंकृत हो उठे थे।

और रजनी ने कहा था—कल शायद मुझसे भेंट करना भी
द न करोगे।

"ओफ़!" उसने अपने मन में कहा। "कैसी विकट समस्या
! शायद ही कभी किसी को ऐसी कठिनाई का सामना करना
ा हो।"

ठाकुर साहब का देहावसान अभी थोड़ी ही देर पहले हुआ
।, उनका मृतक शरीर घर ही में पड़ा था। ऐसी दशा में किसी
सरे विषय पर बात करना भी इन्द्र को पसन्द नहीं आ रहा
। लेकिन क़ानून का चर्खा तो चलता ही रहता है, दुनिया में
हे जो हो जाय। क़ानून की मांग है कि यदि किसी मनुष्य
की हत्या हो जाय, तो उसके हत्यारे को [illegible] प्राण-
दण्ड मिलना चाहिए। और उसकी मांग यह भी है कि हत्यारा
शीघ्रातिशीघ्र गिरफ्तार कर लिया जाय। लेकिन हाथ में लिये
[illegible] इन्स्पेक्टर उसके उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था।

इन्द्र [illegible] और सुना।

"मैं यह जानता हूँ इन्द्र, कि तुम रजनी कुटीर......[illegible]
के पहले न जाओगे।"

"[illegible] तुम्हारा [illegible] है," [illegible]
[illegible]
[illegible]

"उस भेंट के समय मैं भी मौजूद रहूँ तो तुम्हें कोई आपत्ति तो न होगी?"

डंकन कई क्षणों तक उसे तीक्ष्ण दृष्टि से देखता रहा।

"बधाई, इन्द्र! बड़ा अच्छा चुनाव किया है तुमने। अब मेरी समझ में आया कि ऊपरवाली बातों ने तुम्हें क्यों इतना उत्तेजित कर दिया था। खैर वह तुम्हारा मामला है, उससे मुझे कोई मतलब नहीं। मेरी यह निश्चित धारणा है कि ऐसी कोई घटना नहीं होती जिसमें किसी न किसी रूप से किसी स्त्री का हाथ न हो। तुम उससे कब भेंट करना चाहते हो?"

"चार बजे।"

"आज ही?"

"हाँ।"

"लेकिन अभी उससे बात करते समय तो इसके सम्बन्ध में तुमने कुछ नहीं कहा था?"

"न कहा होगा। भेंट करने की बात मैंने कल निश्चित की थी।"

"अच्छा!" डंकन ने कहा। "लेकिन अब तो वह भेंट शायद तुम्हारे लिए कुछ अधिक मनोरंजक न होगी।"

"ठीक कहते हो। लेकिन भेंट तो मैं जरूर ही करूँगा।"

"चार बजे?"

"ठीक चार बजे।"

"मैं ठीक पाँच बजे के करीब पहुँचूँगा।"

"ठीक है। इसकी कुटीर का पता तुम्हें आसानी से लग जायेगा। यह यहाँ से, करीब तीन मील के फासले पर एक बस्ती में है। उस बस्ती का नाम है [illegible]।"

"बड़ा सुन्दर नाम है।"

किन्तु ऐसा होना क्या उचित होगा? नहीं, नहीं। तहकीकात करते समय पुलिसवाले बिलकुल हृदयहीन हो जाते हैं। वे करें क्या, उनका पेशा ही ऐसा है। रजनी आज बहुत काफी परेशानी उठा चुकी है। उसे अब अधिक तङ्ग करना निर्दयता से कम न होगा। टंडन स्पष्ट रूप से वादा कर चुका है कि वह उसे गिरफ्तार नहीं करेगा। अपने वादे से हटनेवाला व्यक्ति तो वह नहीं है। रजनी अभी तक बाहर नहीं निकली। आखिर बात क्या है? चलकर देखना चाहिए। इसी तरह यहाँ बैठे रहने से काम न चलेगा।

फाटक से उठकर वह अन्दर चला। अन्दर की सड़क के आखिरी मोड़ पर पहुँचते ही उसे सदर दरवाजा दिखाई दिया। वह बन्द था और उस पर एक चौकोर सफेद कागज लगा हुआ था। समीप जाकर उसने देखा: वह एक लिफाफा था जो हलका गोंद लगाकर दरवाजे पर चिपका दिया गया था। उस पर लिखा था—"श्रीयुत इन्द्रविक्रमसिंह, रामेन्द्र भवन, श्रीगंज।"

इन्द्र ने बड़ी सावधानी से लिफाफे को दरवाजे से अलग किया। फिर उसे खोलकर उसके अन्दर रक्खा हुआ पत्र निकाल-कर वह पढ़ने लगा—

"प्रिय इन्द्र,

मुझे बड़ा खेद है कि मैं अपना वादा पूरा करने में असमर्थ हूँ। थोड़ा ध्यान करने पर तुम आसानी से समझ जाओगे कि मुझे कैद करना अब मेरे लिए [illegible] असम्भव है। कल से आज तक किसी भी [illegible] पर नहीं है—[illegible] [illegible] दोनों के जीवन पर [illegible] न रहेगा। [illegible] नहीं होगी और [illegible] [illegible] [illegible]

न्त्वना की आशा करना बिलकुल बेकार है। व्यंग्यपूर्ण शब्दों
उसे कुछ सलाह दे देने के अतिरिक्त वह कुछ नहीं करेगा।
र इस समय यह बात वह किसी तरह बर्दाश्त नहीं कर सकता
कोई उसके मुँह पर कहे कि वह बेतरह बेवकूफ़ बना है।

मिलन-कुञ्ज का दूसरा सिरा ऊसर से मिला हुआ था। दो-
र पेड़ों के अतिरिक्त वहाँ केवल झाड़-झंखाड़ ही थे। मरुभूमि
उस भाग में इन्द्र ने कभी कदम नहीं रक्खा था। ज़ोर से सीटी
ना बजाकर अपने कुत्ते को पुकारता हुआ वह उसी ओर
ल पड़ा।

ठाकुर साहब ने उसे बतलाया था कि उस ओर एक बहुत
ड़ा तालाब है, जिसका जल बड़ा स्वच्छ है और जो बराबर
ों का त्यों भरा रहता है। उस तालाब से मिली हुई एक छोटी-
ी नदी है, जिसके द्वारा उसमें जल पहुँचता है। गर्मी के दिनों
वह नदी तो बिलकुल सूख जाती है, लेकिन तालाब बराबर
रा रहता है। रामेन्द्र भवन का माली अक्सर उसमें मछलियों
ा शिकार करता था। उसने इन्द्र से निवेदन किया था कि यदि
वे तबीअत चाहे तो उस तालाब में वह मछली का शिकार
रूर करे। तालाब के पास ही जिस जगह वह अपने जाल
और बंसियाँ इत्यादि रखता था वह भी उसने इन्द्र को बतला दी
ी। जहाँ वह प्रकृति-निर्मित तालाब था वह स्थान एक घाटी
रूप में स्थित था और वहाँ निविड़ नीरवता का साम्राज्य
छाया था। घंटे दो-घंटे शान्तिपूर्वक विचार करने के लिए इससे
अधिक एकान्त स्थान मिल नहीं सकता था। तालाब में इसी
कारण, उसके किनारे बैठकर वह चुपचाप विचार करेगा।
स्पष्ट है इस समय उस [illegible] [illegible] का कोई [illegible]
[illegible]। एक बात स्पष्ट है, [illegible] कि रामेन्द्र-भवन [illegible]
[illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

डकर चिल्लाने लगा। इन्द्र उसका एक शब्द नहीं सुन सका किन यह तुरन्त समझ गया कि वह अत्यधिक उत्तेजित है।

उसका दौड़ना और चिल्लाना बराबर जारी रहा। उस साधारण उत्तेजना का असर इन्द्र के ऊपर भी पड़ने लगा। सकी चाल स्वतः तेज होती गई और [illegible] देर में वह भी उसकी ार दौड़ने लगा। वह उसे पहचान गया। वह था रामेन्द्र-भवन ग माली शिवदीन। इन्द्र जानता था कि शिवदीन बहुत शान्त कृति का आदमी है और आसानी से उत्तेजित हो उठना उसके भाव के सर्वथा विरुद्ध है। अपने काम में वह बड़ा दक्ष था ौर बड़ी होशियारी, इतमीनान और आत्म-विश्वास से काम रता था। आरम्भ ही से वह व्यक्ति इन्द्र को पसन्द आ या था।

शिवदीन को उस दशा में देखते ही इन्द्र समझ गया था कि ई असाधारण घटना घटी है। लेकिन जब पास से उसने उसके ह से उसकी कहानी सुनी, तो उसके आश्चर्य का ठिकाना न हा। उसने समझा कि शायद उसके होश-हवास ठीक नहीं हैं। र उसने कहा उस पर किसी प्रकार विश्वास ही नहीं ाा था।

उसका चेहरा [illegible] था, वह हाँफ रहा था और उसकी आँखों भय का भाव था। रह-रहकर वह काँप उठता था। कुछ समय के [illegible] बोल नहीं सका। कभी वह मुड़कर उस पहाड़ी की र देखता, कभी इन्द्र के चेहरे की ओर [illegible] ताकता।

"क्या बात है शिवदीन?" इन्द्र ने पूछा।

"सरकार, हजूर!" [illegible] पहाड़ी के [illegible] [illegible], [illegible]"

"[illegible] क्या! [illegible] तुम क्या कह रहे हो?"

ा, और उसमें हज़ारों टन पानी था। लेकिन सारे का सारा जल न जाने कैसे, न जाने कहाँ लोप हो गया। अब आप ख़ुद बताइये कि—"

उसे पकड़े हुए इन्द्र बराबर चलता रहा।

"ख़ैर, यही सही," सहानुभूतिसूचक स्वर में उसने कहा, "मान लिया कि महतो का तालाब सचमुच सूख गया। लेकिन इसमें घबराने की क्या बात है? चलो, चलकर देखता हूँ। शायद कोई कारण समझ में आ जाय। यह जादू का काम तो हो नहीं सकता। कोई ऐसा जादूगर मैंने नहीं देखा जो ऐसा अद्भुत काम कर सके।"

"जादूगर का नहीं हुज़ूर, यह पिशाचों का काम है! ऐसे ऐसे खेल यहाँ देखने को मिल रहे हैं जिनके सामने जादूगरी झख मारे! राक्षसों के खेल हैं सरकार, और लोग कहते हैं कि उन्हें देखनेवाले ज़िन्दा नहीं रह सकते! यहाँ के बहुतेरे लोगों ने ये खेल देखे हैं, और वे सब डर के मारे मरे जा रहे हैं! मैं तो सोच रहा हूँ कि घर-बार छोड़-छाड़कर भाग जाऊँ! यहाँ राक्षसों का राज्य कायम हो गया है, और अब अंगरेज़ क्या सारी दुनिया की ताक़त नहीं है! ये सब उस पागल डाक्टर के कब्ज़े में हैं और वह उनसे मनमाने ढंग से काम लेता है। जो कुछ मैंने देखा है वह सब अगर आप भी देखते, तो इस तरह बात न करते! तालाब का उड़ना भी मैंने अपनी आँखों से देखा है!"

"सच कहते हो?"

"जी हाँ हुज़ूर! आज सबेरे जब मैं बाग से वापस आ रहा था तब एकाएक उस पहाड़ी की ओर मेरी दृष्टि गई। वैसे मैं रोज़ दिन में कई बार तालाब का पता लगाने के लिए उसकी ओर देखता हूँ। लेकिन इस समय न जाने क्यों आप ही आप मेरी आँखें उसकी ओर उठ गईं। सबेरे सूरज की रोशनी उस पर

कुछ देर तक इन्द्र उसकी ओर देखता रहा, फिर तेज़ी से घटना-स्थल की ओर चल पड़ा। करीब सौ गज की दूरी से मृत्यु की काली छाया की भाँति बनर्जी सुव्यवस्थित गति से उसका पीछा कर रहा था। किन्तु इन्द्र को इस बात का पता न था।

दसवाँ अध्याय

मुठभेड़

इन्द्र पहाड़ी की उस पगडंडी पर चलने लगा जो अन्य पगडंडियों की अपेक्षा कम खराब थी। ऊबड़-खाबड़ भी वह ज्यादा नहीं थी और झाड़ियाँ भी उसमें बहुत नहीं थीं। उस पर चलना बहुत कठिन नहीं था।

शिवदीन ने अतिशयोक्ति से जरूर काम लिया होगा। वह कुछ पढ़ा-लिखा जरूर है, फिर भी ग्रामीण ही तो है। अन्य देहातियों की तरह वह भी अंधविश्वासी है। बात का बतंगड़ बनाना, तिल को ताड़ कर दिखाना इन लोगों के लिए मामूली-सी बात है। जादू-टोना, भूत-प्रेत, दैत्य-पिशाच—इन सबका उनके दैनिक जीवन में स्थान है। मामूली बातों के लिए भी ओझा से झाड़-फूँक का सहारा लेते हैं। ऐसी दशा में शिवदीन ने जो कुछ बयान किया है उसका अधिकांश कल्पनाजनित अवश्य होगा।

नाहरों के तालाब के सूख जाने के अनेक तर्कसंगत कारण हो सकते हैं। सम्भव है उसका पेंदा फट या धसक गया हो और इस तरह जल का काफी भाग अन्दर समा गया हो। ऐसा अक्सर होते देखा गया है। पानी की सतह की किसी दरार के नाले में पेंदे का धसक जाना असम्भव नहीं है। ऐसा होने

करीब सौ गज आगे बढ़कर, पहाड़ी की चोटी पर पहुँचकर इन्द्र अकस्मात् रुक गया। उसके पैरों ने आगे बढ़ने से इनकार कर दिया। वह स्तब्ध ठगा रह गया। अगाध आश्चर्य में डूबा हुआ वह उस आश्चर्यजनक दृश्य की ओर एकटक ताकता हुआ कई मिनट तक मूर्तिवत् खड़ा रहा।

शिवदीन का बयान अक्षरशः सत्य निकला। महन्तों का तालाब सचमुच गायब हो गया था। जल का एक बूँद भी उसमें नहीं था। जहाँ पहले एक सुन्दर और सुविस्तृत जल-राशि लहराती थी वहाँ अब केवल भूरे रंग का एक गहरा गढ़ा शेष था और वह बिलकुल सूखा था। तालाब के अन्दर उगी हुई घास और नरकुल का रंग भी भूरा हो गया था। नदियों में लगी हुई काई भी भूरे रंग की हो गई थी और थक्के की तरह जम गई थी। हजारों मछलियाँ जहाँ-तहाँ मरी पड़ी थीं। उनकी सफेद चमक बिलकुल मन्द पड़ गई थी।

वह अपने बहकते हुए विचारों को काबू में करने की कोशिश करने लगा। उस घटना को उसने सर्वथा असम्भव मान रक्खा था, किन्तु अब उसकी यथार्थता में कोई सन्देह नहीं रह गया था। इतनी विचित्र थी वह घटना कि उसकी कहानी उलझती ही जा रही थी।

एक बात निश्चित थी, और वह यह थी कि जल के सूखने के पहले ही मछलियाँ मर गई थीं। मृत्यु-रेखा की भाँति तालाब का जल भी निर्जीव हो गया था। जीवन रस से वंचित हो जाने के बाद ही जल नष्ट हुआ था।

इस निर्णय पर पहुँचने के बाद उसे उस घटना और इस घटना में अत्यधिक समानता दृष्टिगोचर हुई। तालाब की भाँति वह मृत्यु-रेखा भी बिलकुल सूखी हुई थी। उसे याद आया कि जहाँ पर भयानक रेखा पड़ी थी वहाँ की जमीन में [illegible]

उठा और उसमें वह छिप गया। उसके फेफड़े में गर्द घुस गई। छींक पर छींक आने लगी। उस धूल में सुँघनी का सा असर था और अच्छी तरह बुकी हुई खड़िया की तरह वह बारीक थी।

जहाँ कहीं वह पैर रखता, घास-फूस, झाड़-झखाड़ चूर-चूर होकर ढेर हो जाते। मृत्यु-रेखा की जो दशा थी, ठीक वही दशा यहाँ भी थी। जीवन-रस यहाँ से भी खिंच गया था और समस्त जीवित वस्तुएँ निर्जीव हो गई थीं।

तट पर दो नावें बँधी थीं। वे ढाल पर तिरछी पड़ी थीं। इन दोनों की भी वही दशा हो गई थी जो घास-फूस की थी। उन पर जड़े हुए लोहे के पत्तरों को उसने स्पर्श किया। उसके छूते ही वे राख होकर गिर गये।

मुड़कर वह पहाड़ी की ओर चल पड़ा। अब उसे टलन के आगमन की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। उसके आये बग़ैर वह कुछ न कर सकेगा। दो दिमाग़ या दो से भी अधिक दिमाग़ जब एक साथ विचार करेंगे तब कहीं शायद वैज्ञानिक उन्माद के इस असाधारण प्रदर्शन का कोई हल निकल सकेगा। अकेले तो उसके लिए कुछ समझ पाना असम्भव है। उसकी दशा तो उस समय उस व्यक्ति की-सी हो गई थी जो घने कुहरे में फँस गया हो और इधर-उधर भटकता हुआ मार्ग खोज रहा हो।

एक परेशानी की बात और है। ठाकुर साहब के दुःखद मृत्यु की ख़बर शीघ्र ही दूर दूर तक फैल जायेगी। वे प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध व्यक्ति थे। कोई ऐरा-ग़ैरा उस हालत में मरता, तो शायद कोई ध्यान भी न देता। लेकिन ठाकुर साहब जैसे रईस और ताल्लुक़ेदार की रहस्यपूर्ण मृत्यु की ख़बर समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुए बिना न रहेगी। मामला आगे बढ़ेगा। समाचारपत्रों और समाचार-समितियों के प्रतिनिधि शीघ्र ही आयेंगे, तरह तरह के ऊल-जलूल प्रश्न करेंगे, अपने ढंग से छान-

"चाय-वाय रहने दीजिए। बस आप फौरन वर्दी पहनकर तैयार हो जाइए। अपने मातहतों को भी तैयार होने का हुक्म दीजिए।"

"बेहतर है हुजूर।"

हवलदार माधवसिंह को आदेश देकर मुंशी जी तुरन्त घर की ओर भागे। पाइप सुलगाकर टंटन कश पर कश खींचने लगा।

वर्दी पहनकर मुंशी जी दस मिनट में वापस आगये।

"घोड़ा तैयार करवाऊँ हुजूर ?"

"नहीं, घोड़े की जरूरत नहीं। पैदल ही चलना होगा।"

"बेहतर है। कांस्टेबिलों को भी साथ ले चलना होगा ?"

"नहीं। बस उन लोगों से कह दीजिए कि तैयार रहें। जब जरूरत पड़ेगी बुलवाये जायेंगे।"

"बहुत अच्छा, हुजूर।"

और तब दो मिनट के बाद वे थाने से निकलकर एक ओर चल पड़े।

टंटन तेज़ी से चल रहा था। मुंशी जी हाँफते हुए उनका साथ दे रहे थे। टंटन एक-एक करके सारी बातें सुना रहा था। मुंशी जी मन ही मन उन्हीं घटनाओं को कोस रहे थे जिनके कारण टंटन का श्रीगंज में आगमन हुआ और उनकी शान्ति नष्ट हो गई।

"अब बतलाइए जनाब," सब कुछ सुना चुकने के बाद टंटन ने कहा, "ये वारदातें क्या संगीन नहीं हैं ? इनकी ओर क्या आप लोगों को ध्यान न देना चाहिए था ?"

"ठाकुर साहब के इन्तकाल की खबर अभी [illegible] ने मुझे [illegible] थी। सुनकर बड़ा अफसोस हुआ। [illegible] [illegible] का ख्याल था। दूसरी बातों के बारे में कहते हैं कि [illegible]

"चाय-वाय रहने दीजिए। बस आप फ़ौरन वर्दी पहनकर तैयार हो जाइए। अपने मातहतों को भी तैयार होने का हुक्म दे दीजिए।"

"बेहतर है हुज़ूर।"

हवलदार माधवसिंह को आदेश देकर मुंशी जी तुरन्त घर की ओर भागे। पाइप सुलगाकर टंडन कश पर कश खींचने लगा।

वर्दी पहनकर मुंशी जी दस मिनट में वापस आगये।

"घोड़ा तैयार करवाऊँ हुज़ूर?"

"नहीं, घोड़े की ज़रूरत नहीं। पैदल ही चलना होगा।"

"बेहतर है। कांस्टेबिलों को भी साथ ले चलना होगा?"

"नहीं। बस उन लोगों से कह दीजिए कि तैयार रहें। जब ज़रूरत पड़ेगी बुलवाये जायेंगे।"

"बहुत अच्छा, हुज़ूर।"

और तब दो मिनट के बाद वे थाने से निकलकर एक ओर चल पड़े।

टंडन तेज़ी से चल रहा था। मुंशी जी हाँफते हुए उसका साथ दे रहे थे। टंडन एक-एक करके सारी बातें सुन रहा था। मुंशी जी मन ही मन वेन्दी घटनाओं को कोस रहे थे जिनके कारण टंडन का क़ौसा में आगमन हुआ और उनकी शान्ति नष्ट हो गई।

"सब इत्तफ़ाक़ जनाब," सब कुछ सुना चुकने के बाद टंडन ने कहा, "ये वारदातें क्या संगीन नहीं हैं? इनकी ओर क्या आप लोगों को ध्यान न देना चाहिए था?"

"ठाकुर साहब के इन्तक़ाल की ख़बर अभी दोपहर को मुझे मिली थी। [illegible] हुआ। [illegible] जाने का इरादा था। इनकी बातों से ऐसे ही लगते हैं कि इलाक़ा

उसके पास समय नहीं था, कई बहुत ज़रूरी काम उसे करने थे। रजनी से किसी न किसी तरह सम्पर्क स्थापित करना ही होगा। बिना इसके काम न चलेगा।

घूम-घूमकर वह बँगले के प्रत्येक भाग का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करने लगा। कुछ देर तक वह इस काम में लगा रहा। आवश्यक बातें वह अपनी डायरी में दर्ज करता जाता था।

निरीक्षण का आवश्यक कार्य समाप्त कर चुकने के बाद वह बँगले से बाहर निकला और नायब को साथ लेकर रामेन्द्र-भवन की ओर रवाना हो गया।

मिलन-कुञ्ज से निकलकर वे कुछ गज़ ही आगे बढ़े थे कि उन्हें अपने पीछे किसी के दौड़ने की आहट मिली। रुककर, घूमकर टंडन पीछे की ओर देखने लगा। नायब को भी रुककर मुड़ना पड़ा। एक व्यक्ति दौड़ता हुआ उनकी ओर चला आ रहा था।

"वह कौन है?"

"कोई देहाती है हुज़ूर!"

"देहाती तो है, लेकिन है कौन?"

वह शिवदीन माली ही था जिसे नागाबवाली घटना ने अत्यधिक आन्दोलित कर दिया था। उनके सामने पहुँचकर वह हाँफता हुआ खड़ा हो गया।

"क्या है?" टंडन ने प्रश्नरूप दृष्टि से उसकी ओर देखकर पूछा, "क्या बात है?"

"रामेन्द्र-भवन का माली हूँ सरकार," दम ले लेकर माली ने उत्तर दिया, "नाम शिवदीन है। इन्द्र बाबू ने आपको फ़ौरन बुलाया है।"

"कहाँ हैं वे?"

महतो का तालाब उड़ गया! इन्द्र और टण्डन वहां गये हैं! कुछ देर तक अरुणा चुपचाप खड़ी रही। फिर वह बाग से बाहर निकली और महतो के तालाब की ओर तेजी से चल पड़ी।

बारहवाँ अध्याय

तालाब पर

पतलून की जेब में हाथ डालकर इन्द्र ने अपना रिवाल्वर निकाल लिया। लेकिन बनर्जी ने रिवाल्वर की ओर दृष्टि भी नहीं डाली। वह बराबर इन्द्र के चेहरे की ओर देखता रहा। एक लम्बे-तगड़े प्रेत की तरह वह मूर्तिवत् खड़ा था।

यह बिलकुल स्पष्ट था कि वह घोर पागल है और साथ ही खतरनाक भी। यह देखने के लिए किसी विशेषज्ञ की आवश्यकता नहीं थी कि उसकी दशा उस डाकगाड़ी की सी हो रही थी जिसका इंजन उसके चालक के काबू से बाहर हो गया हो।

बहुत धीरे से इन्द्र ने अपने रिवाल्वर का घोड़ा खींचा। यह रिवाल्वर ही शायद उस सांड जैसे व्यक्ति से उसकी रक्षा कर सकेगा। उस पूर्ण नीरवता में रिवाल्वर के घोड़े की खटक साफ सुनाई दी। फिर भी बनर्जी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। बड़ी भयानक लग रही थी उसकी वह निश्चल, स्थिर तल्लीनता, और उसके पागलपन का एक घोर प्रमाण उपस्थित कर रही थी।

उसकी उस स्थिर, चुभती हुई दृष्टि के सामने खड़े रहना इन्द्र के लिए अत्यन्त कठिन हुआ जा रहा था। अगर वह पागल उसके ऊपर हमला कर बैठता या हमला करने की चेष्टा करता, तो इतना बुरा न होता। [illegible] भी लड़के की सुरक्षा [illegible]

कोई प्रयोजन नहीं रह गया था। पहाड़ी से उतरकर वह तालाब के किनारे पहुँचा। इन्द्र भी उसके साथ था।

"हाँ, मुझे तुम्हारी ज़रूरत है," गढ़े को गौर से देखते हुए उसने कोमल स्वर में कहा, "तैंतीस मिनट, केवल तैंतीस मिनट लगे। और केवल एक तार ने काम कर दिया। कैसी अद्भुत बात है! लेकिन यह तो मैं जानता ही था। पहली मशीन तैयार करने के पहले ही यह मुझे मालूम हो गया था। और यह ऐसी बात है जिसमें मैं अन्य लोगों से बहुत आगे बढ़ गया हूँ। कोई वैज्ञानिक मेरा मुकाबिला नहीं कर सकता। केवल तैंतीस मिनट में और केवल एक तार के द्वारा महतो का तालाब एक बार फिर अपनी प्रारम्भिक अवस्था में पहुँच गया! बड़े कमाल की बात है! वाह! अब इसमें जरा भी सन्देह नहीं कि संसार का संहार करने में मैं अवश्य सफल होऊँगा! कोई शक्ति मेरे हाथों से संसार की रक्षा नहीं कर सकेगी।"

बनर्जी ने अपना सिर उठाया। उसकी दृष्टि पहाड़ियों के उस पार फैले हुए प्रदेशों की ओर दौड़ गई। फिर उसने अपने सूखे हुए हाथ ऊपर उठाये। उस समय वह ऐसा लगने लगा जैसे वह कोई महान् पुजारी हो और बलिदान के लिए चुने गये जीवों को अन्तिम बार आशीर्वाद दे रहा हो।

"संहार अवश्य होगा! इसकी व्यवस्था हो चुकी है। अपनी दुर्वासनाओं और पापों का बोझ लिये हुए यह संसार नष्ट हो जायगा। बहुत दिनों की बात नहीं है। केवल कुछ दिनों के बाद ही इस दुनिया की दशा ठीक वैसी हो जायगी जैसी आज इस तालाब की हो गई है। केवल धूल-गर्द, अणु-परमाणु ही बच रहेंगे। संसार का और उसकी झूठी सभ्यता का नाम-निशान भी बाकी नहीं रहेगा। संहार होगा, अवश्य होगा।"

कोई प्रयोजन नहीं रह गया था। पहाड़ी से उतरकर वह तालाब के किनारे पहुँचा। इन्द्र भी उसके साथ था।

"हाँ, मुझे तुम्हारी जरूरत है," गढ्ढे को गौर से देखते हुए उसने कोमल स्वर में कहा, "तैंतीस मिनट केवल तैंतीस मिनट लगे। और केवल एक तार ने काम कर दिया। कैसी अद्भुत बात है! लेकिन यह तो मैं जानता ही था। पहली मशीन तैयार करने के पहले ही यह मुझे मालूम हो गया था। और यह ऐसी बात है जिससे मैं अन्य लोगों से बहुत आगे बढ़ गया हूँ। कोई वैज्ञानिक मेरा मुकाबिला नहीं कर सकता। केवल तैंतीस मिनट में और केवल एक तार के द्वारा महनों का तालाब एक बार फिर अपनी प्रारम्भिक अवस्था में पहुँच गया! बड़े कमाल की बात है! वाह! अब इसमें जरा भी सन्देह नहीं कि संसार का संहार करने में मैं अवश्य सफल होऊँगा! कोई शक्ति मेरे हाथों से संसार की रक्षा नहीं कर सकेगी।"

बनर्जी ने अपना सिर उठाया। उसकी दृष्टि पहाड़ियों के उस पार फैले हुए प्रदेशों की ओर दौड़ गई। फिर उसने अपने सूखे हुए हाथ ऊपर उठाये। उस समय वह ऐसा लगने लगा जैसे वह कोई महान् पुजारी हो और बलिदान के लिए चुने गये लोगों को अन्तिम बार आशीर्वाद दे रहा हो।

"संहार अवश्य होगा! इसकी व्यवस्था हो चुकी है। अपनी दुष्टताओं और पापों का बोझ लिये हुए यह संसार नष्ट हो जायगा। बहुत दिनों की बात नहीं है। केवल कुछ दिनों के बाद ही इस दुनिया की दशा ठीक वैसी ही हो जायगी जैसी आज इस तालाब की हो गई है। केवल धूल-धक्कड़, अणु-परमाणु ही बच रहेंगे। संसार का और उसकी दुष्ट सभ्यता का नाम-निशान भी बाकी नहीं रहेगा। संहार होगा, अवश्य होगा।"

ऐसी भयानक शक्तियां उत्पन्न कर ली हैं जिनकी अभी तक केवल कल्पना ही की जाती थी और जिनका उत्पन्न किया जा सकना सर्वथा असम्भव प्रतीत होता था।

वह शक्ति-सम्पन्न था, प्रतिभासम्पन्न था, यह बात पिछले कुछ सप्ताहों में बीसियों बार वह प्रमाणित कर चुका था। उसका धर्मोन्माद उसे धोका नहीं दे रहा था। अपने भयानक उद्देश्यों की पूर्ति कर सकने के लिए उसके पास अपार मानसिक बल था।

टंडन आ गया है या नहीं, इस बात का पता लगाने के लिए इन्द्र इधर-उधर देखने लगा। उसके आगमन का कोई चिह्न कहीं दृष्टिगोचर नहीं हुआ। अगर अब वह शीघ्र ही नहीं आ पहुंचता, तो केवल एक ही उपाय से उसकी रक्षा हो सकेगी। उसकी वह हथेली जिसमें रिवाल्वर दबा हुआ था पसीने से तर हो गई।

बनर्जी ने तालाब के उजड़े-बिखरे पेंदे की ओर इशारा किया।

"उसे देख रहे हो? यही मेरा पहला महत्त्वपूर्ण प्रयोग है। और यह प्रयोग किया गया है उस महान दिवस के लिए जो शीघ्र ही आनेवाला है। केवल एक तार ने यह चमत्कार काम कर दिखाया और एक छोटी-सी मशीन के द्वारा उत्पन्न की गई शक्ति काम में लाई गई। मोटर-कार के मैगनेटो से यह मशीन बड़ी नहीं थी। और वह केवल चौबीस घंटे तक चलती रही थी।

"मेरे कारखाने में बहुत बड़ी-बड़ी मशीनें हैं, और वे वर्षों से काम कर रही हैं। उनकी बनी शक्तियां दिन-रात निरन्तर तारों में संचय होती रहती हैं। संसार को नष्ट भर की शक्ति एकत्र हो चुकी है। उस संहारिणी शक्ति को छोड़ने ही वाला विशाल भूमण्डल छिन्न भिन्न होकर अणु-परमाणुओं में परिवर्तित हो जायगा और फिर वे अणु-परमाणु वाष्प के रूप में बदल जायेंगे।

"तार का केवल लच्छा तालाब के नीचे फेंका गया। टंडन

से भी अधिक सूक्ष्म होकर वह छिन्न-भिन्न हो गया। उसी महाशून्य में वह विलीन हो गया जिससे उसकी उत्पत्ति हुई थी। और अब शीघ्र ही पृथ्वी भी इसी तरह छिन्न-भिन्न होकर महाशून्य में विलीन हो जायगी।"

रुक कर, वह इन्द्र की ओर तीक्ष्ण दृष्टि से देखने लगा। उसके सूखे हुए गालों में हलकी-सी सुर्खी आ गई। उस स्वस्थ्यवान, बलिष्ठ युवक को वह कई क्षणों तक अत्यधिक सन्तोष से देखता रहा।

"लेकिन संहार से पहले एक परम आवश्यक क्रिया सम्पादित होनी है। समस्त जीवों-सहित पृथ्वी का विध्वंस होगा। किन्तु इसे चेतावनी भी मिल जानी चाहिए। यह अधिक अच्छा होगा कि दुनिया के निवासी पाप-गर्त्त में पड़े पड़े न मरें। पापियों को पश्चात्ताप करने का एक अन्तिम अवसर मिलना चाहिए। दयानिधि से दया की भिक्षा उन्हें अब भी मिल सकती है। उनका द्वार सदैव खुला रहता है, कभी किसी के लिए बन्द नहीं होता। लेकिन समय बहुत थोड़ा है, और वह तेजी से बीतता जा रहा है। जो हो, चेतावनी अवश्य दी जायगी और समस्त संसार में उसकी घोषणा करने का दुर्लभ सम्मान तुम्हें प्रदान करने का निश्चय किया गया है।

"मैं तुम्हें परलोक की गुफाओं में ले चलूँगा और वहाँ सब कुछ तुम अपनी आँखों से देखोगे। तुम्हारे सामने उन शक्तियों का मैं प्रदर्शन करूँगा, और तब तुम्हें ज्ञात हो जायगा कि मेरा कथन अक्षरशः सत्य है। मेरे एक महान् यन्त्र की किरणों के उसी प्रभाव-क्षेत्र में तुम केवल दो सेकेंड तक रह सकोगे—सिर्फ केवल दो सेकेंड तक। तुम जल जाओगे। तुम्हारी [illegible], तुम्हारे बाल गायब हो जायेंगे। अपने ही शरीर में तुम उस शक्ति का प्रभाव अनुभव करोगे जो संसार का विध्वंस करेगी

से भी अधिक सूक्ष्म होकर वह छिन्न भिन्न हो गया। उसी महाशून्य में वह विलीन हो गया जिससे उसकी उत्पत्ति हुई थी। और अब शीघ्र ही पृथ्वी भी इसी तरह छिन्न-भिन्न होकर महा-शून्य में विलीन हो जायगी।"

रुक कर, वह इन्द्र की ओर तीक्ष्ण दृष्टि से देखने लगा। उसके सूखे हुए गालों में हलकी-सी सुर्खी आ गई। उस स्वरूपवान बलिष्ठ युवक को वह कई क्षणों तक अत्यधिक सन्तोष से देखता रहा।

"लेकिन संहार से पहले एक परम आवश्यक क्रिया सम्पादित होनी है। समस्त जीवों-सहित पृथ्वी का विध्वंस होगा। किन्तु इसे चेतावनी भी मिल जानी चाहिए। यह अधिक अच्छा होगा कि दुनिया के निवासी पाप-गर्त्त में पड़े पड़े न मरें। पापियों को पश्चात्ताप करने का एक अन्तिम अवसर मिलना चाहिए। दयानिधि से दया की भिक्षा उन्हें अब भी मिल सकती है। उसका द्वार सदैव खुला रहता है, कभी किसी के लिए बन्द नहीं होता। लेकिन समय बहुत थोड़ा है, और वह तेज़ी से बीतता जा रहा है। जो हो, चेतावनी अवश्य दी जायगी और समस्त संसार में इसकी घोषणा करने का दुर्लभ सम्मान तुम्हें प्रदान करने का निश्चय किया गया है।

"मैं तुम्हें परलोक की गुफाओं में ले चलूंगा और वहां सब कुछ तुम अपनी आंखों से देखोगे। तुम्हारे सामने उन शक्तियों का मैं प्रदर्शन करूँगा और तब तुम्हें ज्ञान हो जायगा कि मेरा कथन अक्षरशः सत्य है। मेरे एक महान् मन्त्र की किरणों के [illegible] प्रभाव-क्षेत्र में तुम [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] तुम [illegible] जाओगे। तुम्हारी [illegible] [illegible] [illegible] तुम्हारा [illegible] [illegible] हो जाओगे। [illegible] [illegible] [illegible] में तुम उस शक्ति का प्रभाव अनुभव करोगे जो संसार का [illegible] करेगी

गया है ? बचाव का कोई उपाय क्या वास्तव मे बाकी नहीं है ? नहीं, ऐसी बात नहीं। जब तक उसके पास रिवाल्वर है, यह तर्क प्रभावपूर्ण सिद्ध हुआ। भय का भाव उसके हृदय से तुरन्त गायब हो गया और उसे फिर से साहस आगया।

उसे एक स्वर्ण सुयोग अपने सामने दिखाई देने लगा। उसने पहले ही अनुमान लगा लिया था कि बनर्जी ने अशोक की गुफाओं के गुप्त द्वारों और मार्गों का पता लगा लिया है और उनकी भयानक मशीनें पहाड़ियों के वक्ष मे कहीं काम कर रही हैं। अनेक पुरातत्त्ववेत्ता अनेक बार उन गुफाओं में गये थे, लेकिन उन मशीनों के अस्तित्व के बारे मे उन्हें कभी कुछ पता नहीं लगा था। अगर उन गुफाओं में वे मौजूद होतीं, तो वे उन्हें अवश्य देख लेते। तब कहाँ है बनर्जी का शैतानी कारखाना ?

उसने शायद गुफाओं की एक अन्य श्रेणी का पता लगा लिया है जो सर्वविदित गुफाओं के पीछे या नीचे है। वहीं अपनी मशीनें लगाकर वह निष्कंटक भाव से कार्य-संचालन करता है। अगर किसी तरह वह उन गुप्त गुफाओं मे पहुँच सके, तो काम बन जाय।

बनर्जी उसकी हत्या नहीं करना चाहता। यह विचित्र बात है, किन्तु प्रत्येक पागल मे कोई न कोई विचित्रता अवश्य होती है। यह सम्भव है कि उसके द्वारा उसकी हत्या हो जाय लेकिन जानबूझ कर वह ऐसा कदापि नहीं करेगा। दूसरों मनुष्यों की हत्या वह कर सकता है, लेकिन उसे वह हर्गिज नहीं मारेगा। इसका कारण यह है कि उससे वह एक दूसरा ही काम लेना चाहता है।

अपनी योजना में उसे भी वह वैसा ही महान् स्थान प्रदान कर रहा है जैसा महान् स्वयं उसका स्थान है। [illegible] महान [illegible]-शासक के रूप में, [illegible] पैगम्बर के रूप में दुनिया [illegible]

डाइनामाइट से उड़ा दी जायेगी। परिस्थिति की गम्भीरता से परिचित हो जाने के बाद अधिकारीगण चुपचाप बैठे नहीं रहेंगे। मांगने पर भी बनर्जी को पनाह नहीं मिलेगी। तब तक न दम लिया जायगा न दम लेने दिया जायगा जब तक बनर्जी के पैशाचिक आविष्कार पूरी तरह नष्ट न हो जायेंगे।

मामले का एक दूसरा पहलू भी है। अगर बनर्जी के साथ वह चुपचाप गुफाओं के अन्दर चला जाय, तो यह भी सम्भव है कि वह कभी जीता-जागता बाहर न निकल सके। एक बटन दबाने ही से उसका खात्मा हो सकता है। उसका यह बलिदान बिलकुल बेकार साबित होगा। दुनिया के भाग्य का फैसला हो जायगा, और खतरे की पूर्व सूचना भी उसे नहीं मिल पायेगी।

हंटन क्यों नहीं आया? वह आ गया होता तो बनर्जी जैसे विशालकाय नर-पशु से निपट सकना आसान हो जाता। शिवनाथ को गये बड़ी देर हो गई और डर के मारे वह दौड़ता-भागता गया था।

तब उसे रिवाल्वर की फिर याद आई। इस बात के जाने की आशा फिर उसके हृदय में चमक उठी। उसे भूल जाने के लिए वह अपने को कोसने लगा। जब तक रिवाल्वर उसके हाथ में है तब तक तो बनर्जी उसके नीचे नहीं सकता, चाहे जो हो। स्वर्ण सुयोग अपना [illegible] उसके लिए खोल रखा था। थोड़े से साहस, थोड़ी सी [illegible] से काम लेने से मनुष्यता की विभीषिकाओं का सदैव के लिए अन्त हो जायगा।

रमणीरंजन बनर्जी संसार का सबसे बड़ा आविष्कारक हो सकता है, उसका मस्तिष्क इस युग का सबसे [illegible] मस्तिष्क हो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] को हो सकता। गोली मार देने पर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

ने रँगे हुए उसके कंठस्वर में भय की किंचित्-मात्र छाया नहीं थी।

"हाथ उठाओ! पीछे हटो! मैं कहता हूँ, पीछे हटो—नहीं तो गोली चला दूँगा!"

इन्द्र की आवाज़ अत्यधिक कर्कश हो गई थी, शेर की तरह वह गरज उठा था। लेकिन बनर्जी बढ़ता ही आ रहा था। वह इस तरह हाथ फैलाये हुए था जैसे उसकी बाँह पकड़कर उसे मना लेना चाह रहा हो।

इन्द्र ने उसे अन्तिम बार चेतावनी दी।

"पीछे हट जाओ बनर्जी!" वह गरज उठा. "पीछे हट जाओ. वर्ना सारी गोलियाँ तुम्हारे ऊपर चला दूँगा!"

बनर्जी रुका नहीं। वह लापरवाही से आगे बढ़ता ही गया। रिवाल्वर की नली से वह केवल पाँच गज की दूरी पर था। इन्द्र ने गोली चला दी। ठीक दिल पर निशाना साधकर उसने रिवाल्वर का घोड़ा दबा दिया। धाँय की आवाज़ हुई, और उसकी प्रतिध्वनि दिशाओं में गूँज उठी। बनर्जी लड़खड़ा गया। इन्द्र ने देखा कि गोली उसके सीने पर लगी। गोली के धक्के ने उसे कुछ इंच पीछे ढकेल दिया। किन्तु दूसरे ही क्षण सँभलकर वह फिर आगे बढ़ने लगा। उसके चेहरे पर पागलपन व्यक्त हो गया।

"पीछे हट, ओ पागल!" इन्द्र चिल्लाया।

पर कोई नतीजा नहीं निकला। तब उसने [illegible] फिर तेज़ चमक हुई और गोली की [illegible] सूने तालाब में झनझनाती हुई गूँजने लगी। [illegible] बनर्जी फिर [illegible] गया। [illegible] [illegible] में फिर [illegible] [illegible] धारी पुकार [illegible] फिर [illegible]

धूल के कारण कुछ देख पाना कठिन हो रहा था। धूल के निकल जाने की वह प्रतीक्षा करने लगा। जरा देर में वह निकल गई। अब चारों ओर का दृश्य उसे दिखाई देने लगा। उसे रुकने का आदेश देता, आवाजें लगाता, हाथ हिलाता हुआ और लम्बे-लम्बे डग रखता हुआ बनर्जी चला आ रहा था। उसके पैर जरा भी फिसल नहीं रहे थे बराबर उसका शरीर सँभला हुआ चल रहा था। इन्द्र को बड़ा आश्चर्य हो रहा था, क्योंकि तालाब की दीवारें उन किरणों के प्रभाव से [illegible] फिसलनी हो गई थीं। पैर उन पर फिसले बगैर नहीं रहते थे। बिना फिसले उन पर चल पाना अत्यधिक कठिन था। हर जगह खूब बारीक और चिकनी धूल पड़ी पड़ी थी। बनर्जी के बड़े-बड़े बूट धूल में काफी गहराई तक धँस जाते थे, पर फिसलते न थे। इन्द्र के हृदय में भय का पुनः संचार होने लगा। उस नर-पशु से बच पाना उसे कठिन प्रतीत होने लगा। गोलियाँ उसे रोक नहीं सकीं। अपना पूरा रिवाल्वर उसने उसके ऊपर खाली कर दिया था। अनेक गोली उसे लगी थी। कई गोलियाँ उसके सीने पर भी लगी थीं। लेकिन किसी गोली का कोई असर उसके ऊपर नहीं हुआ। वह ज्यों का त्यों बना रहा।

इसमें सन्देह नहीं कि अब वह जान में फँस गया है, और वह पागल दैत्य की तरह उसकी ओर झपटा आ रहा है। अब क्या करना चाहिए? बचने की पूरी कोशिश किये बिना उसके चंगुल में फँस जाना तो उचित नहीं? नहीं, नहीं। वह आगे [illegible] लगा, दौड़ने लगा। [illegible] पर [illegible] पड़ा, लेकिन फिर [illegible] सँभलकर भागता। [illegible] उसके [illegible] और [illegible] से दूर करने के लिए [illegible] करने लगीं। [illegible] अपने [illegible] में गोलियाँ भरने लगा। लेकिन [illegible] कि रिवाल्वर उसकी [illegible] नहीं कर सकता। [illegible]

महना फिसलन से बचने की कोशिश करते हुए वह लड़खड़ा गया। पैर धूल में धँस गये। पंजों को आगे गाड़कर निकलने के बजाय वह अपने पैरों को घुमाने लगा। धूल का एक बड़ा-सा ढेर नीचे खिसक गया और बनर्जी उसके परदे में ढक गया। उसे कुछ देर के लिए रुक जाना पड़ा। इन्द्र तेज़ी से ऊपर चढ़ने लगा।

उसने ऊपर की ओर दृष्टि दौड़ाई। टंडन कहीं दिखाई नहीं दिया। अभी तक वह नहीं आया! क्या बात है? अब वह ऊपर पहुँच जायगा, और तब बनर्जी उसे किसी तरह पकड़ न सकेगा। नीचे की ओर धूल उड़ाता हुआ वह ऊपर चढ़ता गया।

जब तालाब पाँच गज दूर रह गया, तब वह दम लेने के लिए रुक गया। उसने मुड़कर नीचे दृष्टि डाली। बनर्जी खड़ा था और उसकी ओर असीम क्रोध से ताक रहा था। वह जान गया था कि इन्द्र को पकड़ पाने में वह क्यों असफल रहा।

तेरहवाँ अध्याय

अरुणा की विकलता

इन्द्र ऊपर चढ़ गया। ठीक उसी समय उसे पीछे की तरफ़ [illegible] लगी। एक पागल के अनियंत्रित रूप से फेंका हुआ एक भारी मोटा [illegible] उसके सिर पर लगा। मस्तिष्क पर भारी आघात हुआ, भयानक पीड़ा अनुभव हुई। आँखों के सामने अँधेरा छा गया और वह [illegible] पर गिरकर बेहोश हो गया।

[illegible] [illegible] से एक क्षण के लिए [illegible] और फिर [illegible] हो गया।

पड़ा था। मामूली मार-पीट के कई मामलों की तहकीकात भी उन्होंने की थी। लेकिन इस तरह की संगीन वारदात का सामना उन्हें कभी नहीं करना पड़ा था, न ऐसे मामलों की जाँच करके नाम कमाने का हौसला ही उन्हें था। उनकी राय में सामना करने का हौसला करना कोरा पागलपन था।

टंडन अपनी नोटबुक में तेजी से लिख रहा था।

"देखा आपने?" उसने पूछा।

"जी हाँ, हुजूर," शिकायत-भरे स्वर में नायब ने उत्तर दिया।

"गनीमत है! यही है बनर्जी। उसका जीवट देखा? कैसा भयानक आदमी है! ऐसे व्यक्ति से मुकाबिला है जनाब। उससे निपटने से जी चुराइएगा, तो वह एक दिन आपको भी भर रखेगा, समझे? आप हिम्मत से काम लेते और पहले ही कार्रवाई करते, तो नौबत शायद यहाँ तक न पहुँचती। खैर, जो हुआ सो हुआ। अब गफलत से काम नहीं चलेगा। दारोगा साहब वापस आ गये होंगे?"

"नहीं, हुजूर," विकल स्वर में नायब ने उत्तर दिया। "वे तो कल सवेरे वापस आयेंगे।"

"खैर, कोई हर्ज नहीं। आप तो मौजूद ही हैं। फौरन थाने जाइए, और अपने जवानों को साथ लेकर जाइए। [illegible] की गुफाओं पर जल्द से जल्द हमला करना होगा। अगर हो सके तो [illegible] लोगों को भी जमा करके ले जाइएगा। लालटेनें, मशालें, चिराग, रोशनी के जो भी सामान मिल सकें, साथ लाइएगा। और दो-एक खड़िया भी लेते जाइएगा। भूलिएगा नहीं। खड़िया की भी सख्त जरूरत है। उससे मैं जमीन पर निशान लगाना चाहूँगा, ताकि गुफाओं से बाहर निकलने में कोई कठिनाई न हो। समझ गये?"

"आप—आप ही मिस्टर टंडन हैं न ?" कड़ी आवाज में ...ने पूछा।

"हाँ, लेकिन ज़ोर से मत बोलिए। यहाँ एक—"

"आपकी आँखों के सामने एक व्यक्ति के ऊपर घातक आक्रमण किया गया, और आप चुपचाप देखते रहे! ये हज़रत ... यहाँ मौजूद हैं। कहने को दारोगा हैं और ईश्वर की दया से ... भारी-भरकम भी हैं, लेकिन हिम्मत का यह हाल है। आप ...नों ने उन्हें बचाने—"

"बस कीजिए मिस अरुणा," बात काटकर टंडन ने कहा।

किन्तु अरुणा ने ध्यान नहीं दिया।

"आप जानते हैं कि वे दोनों कौन हैं ?" उसने पूछा। ऐसा ...ान पड़ा जैसे उत्तेजना के आधिक्य के कारण वह मूर्च्छित ...आ ही चाहती है।

"हाँ—उनमें से एक बनर्जी था," शान्त स्वर में टंडन ने कहा।

"और—दूसरे व्यक्ति थे इन्द्रविक्रमसिंह! कृपया आप तो ...नकी रक्षा करने के लिए कुछ कीजिए। उनकी जान खतरे में है। बनर्जी उन्हें मार डालेगा। उन्हें बचाइए—ईश्वर के लिए उन्हें बचाइए! वापस लाइए, उन्हें बचाकर वापस लाइए।"

"मिस राठोर!" टंडन ने गम्भीर स्वर में कहा, "[illegible] अब ...आप अपने को तुरन्त काबू में न करेंगी और [illegible] न ...रेंगी, तो मैं आपका मुंह बन्द कर दूंगा। इसी तरह [illegible] ... आपको कुछ देर [illegible] और [illegible] किया जायेगा, तो इसकी ...पड़ेगा। आपकी आवाज [illegible] जा रही है। [illegible] ...आप निश्चिन्त रहें। मुझे यही आशा—"

[illegible]

[illegible]

दाशिव का विरोध करने के बराबर होगा। कौन अनादि शिव
ा विरोध करने का साहस कर सकेगा? फिर सावधानी न काम
ले या आत्म-रक्षा के लिए तैयार रहने की आवश्यकता ही
हीं है?

केवल एक व्यक्ति ने कुछ विरोध प्रदर्शित किया था। जो
स समय आहत और अचेत उसके कंधों पर लदा है।

जब गुफायें निकट आ गईं, तब टंडन भी बनर्जी के निकट
ा गया। पहाड़ी से टूटकर अलग हुई चट्टानें ढेर की ढेर इधर
धर बिखरी पड़ी थीं। उन्हीं के बीच वह लुकता-छिपता चल
ा था। एक स्थान पर रुककर उसने अपने जूते उतार डाले।
न्हें एक पत्थर के पीछे छिपाकर वह फिर लपक कर उसके पीछे
ो लिया। जब तक बनर्जी गुफाओं के एक द्वार में घुस नहीं
या, तब तक वह उसकी छाया का अनुसरण करता रहा।

नरोक की गुफायें उस पहाड़ी जिले में आश्चर्य तथा
ौतूहल की वस्तु थीं। भूतत्त्वज्ञ उनकी उपस्थिति का वास्तविक
ारण समझ पाने में असमर्थ थे।

पहाड़ियों के अन्दर वे कितनी दूर तक चली गई थीं, यह
ो ठीक तरह कोई नहीं जानता था। भूतत्त्वज्ञों का मत था कि
सृष्टि के आदि-काल में जमीन के सिकुड़ने के कारण [illegible]
[illegible] भूमि के अन्दर से कुछ [illegible] पदार्थों [illegible]
[illegible] निकल पड़ी होंगी और इस तरह इनकी रचना
हुई होगी।

एक सिरे से दूसरे सिरे तक इन अँधेरी गुफाओं का [illegible]
[illegible] निरीक्षण कर लेना [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

बनर्जी गायब हो गया था। उसके जूतो की आवाज भी किसी ओर से नहीं आ रही थी। वह आ भी कैसे सकती थी। कुछ देर तक वह इस आशा मे खड़ा रहा कि शायद बनर्जी फिर दिखाई पड़ जाय या उसकी आहट ही मिल जाय। किन्तु व्यर्थ। तब साहस करके उसने अपना टार्च जला लिया। टार्च की तेज रोशनी कन्दरा के एक भाग मे फैल गई। गिरते हुए जल मे प्रकाश की किरणें निकल-निकलकर नाचने लगी। कन्दरा की भीगी हुई दीवारें प्रकाशमान हो उठीं।

जल की एक बड़ी मोटी धार तेजी से गिर रही थी, जो अन्धकार मे काली स्याही-सी लगती थी। उसने टार्च ऊपर की ओर उठाया, लेकिन वह अन्धकार पूरी तरह दूर करने में असमर्थ सिद्ध हुआ। जहाँ तक वह देख सका, उसे जल की धार ही दिखाई दी।

झरने के अतिरिक्त उस कन्दरा मे कुछ नहीं था। टार्च की रोशनी चारों ओर फेंक-फेंककर उसने ध्यान से देखा। बनर्जी का कोई चिह्न कहीं दृष्टिगोचर नहीं हुआ। हर ओर भीगी, काली दीवारें खड़ी थी। कोई द्वार, कोई सूराख कहीं दिखाई नहीं दिया। एक चूहा भी वहाँ नहीं छिप सकता था। तब बनर्जी कहाँ गायब हो गया?

मन ही मन झुंझलाता हुआ, आगे और गौर से देखता हुआ वह [illegible] लगा। जिस द्वार से वह [illegible] आया था उसी से [illegible] तो नहीं हो गया? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। एक मनुष्य से अधिक के लिए उसमें जगह नहीं है। बनर्जी के उसमें [illegible] कुछ देर बाद ही वह भी उसमें घुसा था और उसके निकलने के बाद वह बराबर उधर [illegible] ही रहा है। बनर्जी अगर फिर उससे घुसता, तो उसे जरूर मालूम हो जाता। हो न हो [illegible] यहीं है, यहीं कहीं छिपा है। कहाँ है वह?

बनर्जी गायब हो गया था। उसके जूतों की आवाज भी किसी ओर से नहीं आ रही थी। वह आ भी कैसे सकती थी। कुछ देर तक वह इस आशा से खड़ा रहा कि शायद बनर्जी फिर दिखाई पड़ जाय या उसकी आहट ही मिल जाय। किन्तु व्यर्थ। तब साहस करके उसने अपना टार्च जला लिया। टार्च की तेज रोशनी कन्दरा के एक भाग में फैल गई। गिरते हुए जल से प्रकाश की किरणें निकल-निकलकर नाचने लगीं। कन्दरा की भीगी हुई दीवारें प्रकाशमान हो उठीं।

जल की एक बडी मोटी धार तेजी से गिर रही थी, जो अन्धकार में काली स्याही-सी लगती थी। उसने टार्च ऊपर की ओर उठाया, लेकिन वह अन्धकार पूरी तरह दूर करने में असमर्थ सिद्ध हुआ। जहाँ तक वह देख सका, उसे जल की धार ही दिखाई दी।

झरने के अतिरिक्त उस कन्दरा में कुछ नहीं था। टार्च की रोशनी चारों ओर फेंक-फेंककर उसने ध्यान से देखा। बनर्जी का कोई चिह्न कहीं दृष्टिगोचर नहीं हुआ। हर ओर भीगी, काली दीवारें खड़ी थीं। कोई द्वार, कोई सुराख कहीं दिखाई नहीं दिया। एक चूहा भी वहाँ नहीं छिप सकता था। तब बनर्जी कहाँ गायब हो गया?

मन ही मन झल्लाता हुआ, चारों ओर गौर से देखता हुआ वह चुपचाप खड़ा रहा। जिस द्वार से वह अन्दर आया था कहीं उसी से वापस तो नहीं हो गया? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। एक मनुष्य के भागने के लिए उसमें जगह नहीं है। बनर्जी के घुसने के कुछ क्षण बाद ही वह भी उसके पीछे था और [illegible] निकलने के बाद वह बराबर उसके [illegible] ही खड़ा रहा है। उसकी नजर बचाकर भागना, तो [illegible] असम्भव हो जाता। ऐसे में तो, वह फिर भी यहीं है, यहीं कहीं छिपा है। कहाँ है वह?

आगे दखल दूँगा, तो रजनी झमेले मे फँस जायगी और उसे जन्म की हवा खानी पड़ेगी।"

उसे याद आई उस समय की सारी बातें जब रामेन्द्र-भवन के पुस्तकालय के बन्द दरवाजे के सामने घुटनो के बल बैठा हुआ कुञ्जी के सूराख से वह अन्दर का सारा दृश्य देख रहा था और याद आई इन्द्र की बाद वाली हरकतें। जो कुछ उसने देखा, सुना था उससे मामला आईने की तरह साफ हो गया था।

"भैया टउन !" उसने मन मे कहा, "अब लौट चलो। अभी यहाँ तुम्हारा काम नही है। इन लोगो को आपस में निपट लेने दो। यही बेहतर होगा। नायब का दल जब आ जाय तब तुम्हारा मौका आयेगा।"

टार्च की सहायता से दीवारो पर अपने हाथ से बनाये हुए निशानों को खोजते और उन्हें गाढ़ा करते हुए, सावधानी से चलकर वह गुफाओं से बाहर निकला।

पन्द्रहवाँ अध्याय

कब ?

टउन रामेन्द्र-भवन की ओर चला। उसके मस्तिष्क में एक विचित्र भाव चक्कर काट रहा था। उसे ऐसा जान पड़ रहा था जैसे रमणीरंजन बनर्जी का भूत उसके पीछे-पीछे चला आ रहा है। रमणी बनर्जी जो भारतवर्ष का दुर्भाग्य रहे हैं और जिसने मानवजाति के विरुद्ध विद्रोह का झंडा [illegible] किया है। संसार के निवासी इस समय [illegible] या [illegible] हुए होंगे। [illegible] फिर रहा है, और [illegible]

दिखाई दिया। ज़ोर ज़ोर से आवाजें लगाता हुआ वह उसी की ओर दौड़ा।

एक स्त्री काँपती हुई छाया-सी उस दरवाजे के बाहर आकर खड़ी हो गई। उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं।

"मिस राठौर !"

वह थरथर काँपती हुई गुम-सुम खड़ी रही।

"मिस राठौर !" तीव्र स्वर में टंडन ने कहा "क्या बात है ? अगर तबीयत खराब हो तो जाकर आराम करो। इस तरह घर के बाहर खड़ी रहने से तबीयत ज़्यादा खराब हो जायगी। सुनती हो ?"

"नहीं !" अरुणा ने भावशून्य स्वर में कहा। "घर के अन्दर अब मैं कदम नहीं रक्खूँगी। मुझे डर लग रहा है। इसी लिए मैंने खिड़कियों में मोमबत्तियाँ जला दी हैं। पापा चले गये। लेकिन इतने ही से बस नहीं होगा। अभी बहुतों की जानें जायँगी। इसका मुझे पूरा विश्वास हो गया है।"

टंडन ने उसकी बाँह पकड़ ली। उसे ऐसा जान पड़ा जैसे वह बेहोश हुआ ही चाहती है।

"बहकी बातें करने से काम नहीं चलेगा। तुम्हें फौरन आराम करना चाहिए। किसी को बुलाना पड़ेगा।"

अरुणा को छोड़कर, अन्दर जाकर उसने चिल्लाकर कहा—

"सालिगराम ! जल्दी आओ।"

कोई उत्तर नहीं मिला। तीन बार उसने सालिगराम को पुकारा [illegible]। लेकिन एक बार भी उत्तर न पाया। [illegible] वह हाल में इधर-उधर टहलने लगा। [illegible] और ज़ोर से बन्द कर दिया। [illegible] पर [illegible] थीं। [illegible] रह रह कर [illegible] [illegible] दी [illegible] [illegible] खिलखिलाकर [illegible] रही।

ा गये। कालूराम भी नही रुका, मैने उन लोगो को रोकने
पूरी कोशिश की लेकिन वे किसी तरह नही रुके।"

"सब भाग गये !" गम्भीर स्वर मे टंडन ने कहा। 'खैर,
वैसी नही हो, ईश्वर को धन्यवाद है !"

अरुणा की हिम्मत बँधी। वह उसके बिलकुल समीप आ
और टंडन का हाथ एकाएक उसके हाथो मे पहुँच गया।

"यह अच्छा ही हुआ कि वे चले गये' टंडन ने तेजी से
ा। "वे सबके सब कायर हैं, साहस उनमे जरा भी नही।
च्छा हुआ, घर साफ हो गया, परेशानी कुछ कम हो गई।

सहमतिसूचक भाव से अरुणा ने सिर हिलाया।

"आप क्या करने जा रहे हैं मिस्टर टंडन ? मै सब कुछ
ने को तैयार हूँ पर इस मकान मे अब मैं किसी तरह रुकी
हीं रहूँगी। इस तरह मेरी ओर मत देखिए—मेरी तबीयत अब
ों हो गई है। अब मुझे किसी चीज का भय नही है।'

"शाबाश !" प्रसन्न होकर टंडन ने कहा। "यही भाव तुम्हारे
य है ! इन्द्र के विषय में तुम्हें चिन्ता करने की जरूरत नहीं।
स पागल का दिमाग किस तरह काम करता है, यह मै अच्छी
ह जानता हूँ। मैं—"

"मुझे धोखा तो नहीं दे रहे हैं मिस्टर टंडन ? आपको पूरा
श्वास है ?"

"पूरा। इसका कारण है। वह इन्द्र को अशोक की [illegible]
ले गया है और समझता है कि उसके साथ जो कुछ बातें
न सकता है। इस तरह के सभी लोग स्त्रियों और [illegible]
ी जरूरत अत्यधिक महसूस करते हैं। [illegible] अपनी [illegible]
ोजनाओं में बिलकुल अकेला [illegible] रहा है। जब [illegible] कि इन्द्र
मुझे चंगुल मे फँस गया है, वह उसे अपने [illegible]
[illegible] दिखाने और उसकी [illegible] करने में [illegible] होगा।

रामेन्द्र-भवन से निकलकर वे रजनी-कुटीर की ओर चल पड़े। घृणा तथा असन्तोष-जनित उत्तेजना के कारण भय अरुणा के मन से दूर हो गया था और वह पुरुषों के समान तेज़ी से चल रही थी। कभी कभी टंडन के लिए उसके साथ साथ चल पाना कठिन हो उठता था।

कुछ देर के बाद रजनी-कुटीर आ गया। उसकी एक खिड़की में रोशनी बाहर निकल रही थी। अरुणा का [illegible] ज्यों का त्यों बना हुआ था। अरुणा ने बन्द दरवाज़े पर धक्का लगाया। कोई उत्तर नहीं मिला। झल्लाकर, कुछ भुनभुनाकर, उसने फिर धक्का दिया। दरवाज़ा खुला। रजनी सामने खड़ी थी।

घृणापूर्ण दृष्टि से अरुणा उसे देखने लगी।

"आप लोग क्या चाहते हैं?" रजनी ने घबराकर पूछा।

अरुणा ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसका क्रोध बढ़ता ही जा रहा था। रजनी ने दरवाज़ा बन्द करना चाहा, लेकिन अरुणा उसे ठेलकर अन्दर चली गई। टंडन भी अन्दर पहुँच गया।

"दरवाज़ा बन्द कर दीजिए, मिस्टर टंडन," कठोर स्वर में अरुणा ने आज्ञा दी, फिर वह रजनी की ओर मुड़ी। "सुनो जी! [illegible] लोगों [illegible] की गुफाओं में [illegible] [illegible] पड़ेगा। कहाँ तक [illegible] देर में [illegible] होगी?"

रजनी ने उसकी ओर देखा, और वह मुस्कराती हुई [illegible] उसकी दृष्टि में घृणा नहीं थी। क्रोध भी नहीं था। [illegible] भाव से उसने सिर हिलाया।

"[illegible] नहीं होगी?" [illegible] स्वर के [illegible] में [illegible]।

[illegible]

"मैं नही जानती कि बनर्जी से तुम्हारा क्या रिश्ता है और मुझे इसकी कोई परवाह भी नही है। इस समय मै केवल इन्द्र की बात सोच रही हूँ, किसी दूसरी बात की मुझे चिन्ता नही है। मैं चाहती हूँ कि तुम मुझे सुरक्षित ढग से बनर्जी के पास पहुचा दो, ताकि मैं उससे दो बातें कर सकूँ। तुम्हे मेरा यह काम करना होगा ?"

"मैं इनकार करना नही चाहती" शान्त स्वर मे रजनी ने आश्वासन दिया। "केवल इतना ही निवेदन करना चाहती है कि यह कार्य सर्वथा असम्भव है। आप नही जानती कि बिन बुलाये मेहमानो को रोकने के लिए बनर्जी ने वहा नरकाब नहीं लगा रक्खी है ? मिस्टर टडन ने बडी बुद्धिमानी का काम किया कि वापस चले आये। वहां पहुँचकर आप जीवित नहीं लौटेंगी एक मिनट भी शायद आप वहां जीवित नही रह सकेंगी "

"तुम्हारे शब्दो पर मुझे विश्वास नहीं होता." अरुणा ने कहा। "तुम मुझे चकमा दे रही हो।"

"नहीं, ऐसी बात नही," स्नेहपूर्ण स्वर में रजनी ने कहा। "कितनी ही बातें ऐसी हैं जो आप समझ नहीं रही हैं। आपका चिंतित होना बेकार है। आप अगर यहाँ रुकी रहना चाहती हैं, तो शौक से रुकी रहें। मैं जाती हूँ।"

अपनी आंखों मे अपार सरलता भरे हुए वह दरवाजे की ओर ऐसे शान्त भाव से बढ़ी मानो वह [illegible] में विचरण कर रही हो। अरुणा मन्त्र-मुग्ध दृष्टि से उसकी ओर देखती रही; अरुणा तेजी से उठी और दरवाजे पर अपनी पीठ लगाकर खड़ी हो गई।

"नहीं मैं तुम [illegible]," [illegible] स्वर में उसने कहा। "तुम [illegible] नहीं हो। [illegible]।"

[illegible] दृष्टि से रजनी ने उसकी ओर देखा।

इनजेक्शन लेते हैं। इसी लिए तो कहती हूँ कि गुफाओं में स्नान हो होंगे।"

इन लोगों की उपस्थिति की ज़रा भी परवाह किये बिना वह अपने काम में लगी रही। बड़ा बक्स खोलकर, इनजेक्शन की पिचकारी निकालकर उसने एक ओर रख दी। अँगीठी की आग के ऊपर उसने एक छोटी सी केटिल लटका दी। दो मिनट में जल खौलने लगा। थोड़ा-सा खौलता जल उसने एक प्लेट जो शीशे के गिलास में डाल दिया। फिर छोटे बक्स से मॉर्फिया की तीन टिकियाँ निकालकर गिलास के जल में छोड़ दीं।

"तीन!" आश्चर्यसूचक स्वर में टंटन ने कहा क्योंकि उसने देख लिया था कि टिकियाँ गहरी शक्ति की हैं। "कोई आश्चर्य नहीं कि वह पागल है।"

"उन्होंने बतलाया था," रजनी ने कहा, "कि अब आगे उन्हें दूसरे बक्स की ज़रूरत नहीं पड़ेगी।"

सर रुस्तवानी के चेहरे पर असीम निराशा, अपार विवशता व्यक्त हो गई। रजनी के ये शब्द साधारण थे, किन्तु उनका अर्थ भयानक था। बनर्जी का कार्यक्रम समाप्ति के निकट पहुँच गया है, यही उनके इस कथन का तात्पर्य रहा होगा। मॉर्फिया की कृत्रिम शक्ति की ज़रूरत अब उसे नहीं पड़ेगी। उसका काम ख़त्म होने को है। कल पाँच बजे शाम को—

"सुनो, रजनी—" टंटन आगे कुछ कह नहीं सका, क्योंकि रजनी ने तुरन्त अपने ओठों पर उँगली रखकर चुप रहने का संकेत किया।

खिड़की के बाहर से [illegible] सुनाई देने लगी। [illegible] की ओर बढ़ी। [illegible] [illegible], और [illegible] कार्यक्रम में परिवर्तन करने का [illegible]। [illegible]।

धमकियाँ देने और डींगें मारने का समय निकल गया था। एक ही विचार अब उसके मस्तिष्क पर अधिकार जमाये था। वह था अपने विशाल कर्त्तव्य का पालन करने का विचार।

"नमस्कार, मूर्खो !" दरवाजे के समीप रुककर उसने कहा "मैं कभी कुछ भूलता नहीं। अपने काम पर जा रहा हूँ। आप लोग भी अपना काम करें। और मेरी सलाह आप लोगों को यह है कि मेरा पीछा न करें, क्योंकि इससे कोई लाभ न होगा। अशोक की गुफाओं के द्वार बड़े खतरनाक हैं। मेरे अतिरिक्त कोई इस समय उनमें प्रवेश नहीं कर सकता। मैं जानता हूँ कि आप लोग मुझे रोकने का साहस नहीं करेंगे। मेरी मशीनें इस समय भी चल रही हैं और कल के लिए शक्ति एकत्र कर रही हैं। उनकी संचालन-विधि मेरे अतिरिक्त किसी को मालूम नहीं है। मैं ही उन्हें रोक सकता हूँ। और—सज्जनो, आपको अच्छा लगे या बुरा, आज मैं बड़ा, बहुत बड़ा—आप लोगों से भी बड़ा आदमी बन गया हूँ।"

वह चला गया। उसकी पदध्वनि सुनाई देने लगी, और फाटक के खुलने की आवाज आई। फिर [illegible], सर रामस्वामी [illegible] की ओर मुड़े।

"बड़ी जल्दी तकलीफ तुम्हें मुझसे भी [illegible]," उन्होंने कहा। "लेकिन यह [illegible] की बात है कि वह चला गया। मुझे तो आशा होने लगी थी कि वह हमें [illegible] देगा। [illegible] ने हमारा [illegible]।"

[illegible]

[illegible]

लगा था। बिजली के बल्ब इधर-उधर जल रहे थे। वह गुफा समस्त गुफाओ से बडी और लम्बी चौडी थी एक ही द्वार उसमें था, और वह था उस झरने के ठीक पीछे।

डायनेमो की-सी शक्ल की बडी-बडी मशीनें सामने लगी थीं। एक विचित्र प्रकार की भनभनाहट उनसे निकल निकलकर हवा में बराबर एक ही गति से गूँज रही थी झरने की आवाज़ हल्की हल्की सुनाई पड रही थी।

मशीनें दो लम्बी पंक्तियो मे लगी थी और तांबे के चमकते हुए तारो के द्वारा वे एक दूसरे से जुडी हुई थी। एक ओर दीवार पर एक बहुत बडा स्विचबोर्ड लगा हुआ था। वे विशाल पीपे जिनमे इन मशीनो-द्वारा उत्पन्न हुई शक्ति संचित हो रही थी कहीं दिखाई नही दिये। इन्द्र ने अनुमान किया कि वे वहीं कहीं अवश्य मौजूद होंगे।

बडी देर तक बनर्जी उसके पास नहीं आया। वह अपनी मशीनों के बीच चल-फिर रहा था। कभी वह इस पुर्जे को ठीक करता कभी उस पुर्जे को, कभी इस पेंच को कसता कभी उस पेंच को। एक बडे बल्ब के तीव्र प्रकाश मे वह अधिक स्पष्टता से दृष्टिगोचर हुआ। तब इन्द्र ने एक ऐसी बात देखी जिसने गोलियों के प्रभाव से उसके सुरक्षित रहने का भेद खोल दिया। वह एक [illegible] की कमीज़ पहने हुए था जो उसके शरीर को गर्दन से घुटनों तक ढंके हुए थी। लोहे की नन्ही नन्ही कड़ियों को [illegible] कड़ियों को एक दूसरे से जोड़कर वह कमीज़ तैयार की गई थी, और उसके नीचे [illegible] का अस्तर लगा हुआ था।

इन्द्र का शरीर पसीने से डूबा जा रहा था। [illegible]

[illegible]नेवाली आवश्यक बातें तुम्हे समझानी हैं। सम्भव है विद्रोह की भावना अब भी तुम्हारे अन्दर मौजूद हो और अवसर पाकर उभर पड़े। अपनी शक्तियों का प्रदर्शन और तुम्हारी रखवाली दोनों काम मैं एक साथ नही कर सकूँगा। तुम्हे—

"लेकिन इस हालत मे बैठे-बैठे मैं तुम्हारी बाते समझ नही सकता," तीव्र स्वर मे इन्द्र ने कहा। "सिर से पैर तक तुमने मुझे बाँध रक्खा है। जो कुछ तुम दिखाओगे वह सब मैं देख भी नहीं सकूँगा। मेरा सिर दुख रहा है, फटा जा रहा है। क्या तुम समझते हो कि मैं यहाँ से भाग जाऊँगा? यहाँ के मार्गों से मैं परिचित नहीं हूँ, पत्थर की दीवारें मैं तोड़ नही सकता। और तुम्हारी दृष्टि से बच निकलना मनुष्य के मान की बात नहीं है। मैं किसी तरह भाग नही सकता। तारों को मेरे शरीर से हटा दो, और अपनी बातें समझ सकने का मुझे मौका दो।"

बनर्जी दो क्षण तक विचार करता रहा। इन्द्र का अनुरोध उसे कुछ उचित प्रतीत हुआ। किन्तु अन्त में उसने अस्वीकृति-सूचक भाव से सिर हिलाया।

"नहीं, यह जरूरी है कि तुम जिस तरह बैठे हो उसी तरह बैठे रहो। इसी अवस्था में तुम्हारे ऊपर अपनी किरणें सुविधापूर्वक फेंक सकूँगा। अगर तुम चलने-फिरने लगोगे, तो किरणों का प्रभाव मेरी किरणों के ऊपर भी पड़ेगा और इन [illegible] क्षति पहुँचेगी। बस, तुम्हें इसी तरह बैठे रहना पड़ेगा। [illegible] का [illegible] बिना तुम आसानी से देख सकते हो। यहाँ तुम्हारी आँखों के सामने मैं अपने प्रयोगों का प्रदर्शन करूँगा।"

दूसरी ओर से वह एक दूसरी [illegible] और [illegible] [illegible] निकाल दिया। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

दूर थी और उसका कोई तार उससे जुड़ा नहीं था। उसी अज्ञात धातु का एक बड़ा-सा चोगा बनर्जी ने पारे के गोले पर लगा दिया और उसका मुख सीधा उस लोहे की ओर कर दिया। फिर उसने मशीन के नीचे लगा हुआ एक खटका दबा दिया। गोला तुरन्त प्रकाशमान हो उठा। हरे रंग का बड़ा तीव्र प्रकाश चोगे से निकलने लगा। वह प्रकाश ठीक वैसा ही था जैसा गुफाओं के बाहर इधर अकसर दिखाई देता था।

इन्द्र आँखें फाड़कर देखता रहा। जरा भी आवाज़ उस भयानक यंत्र से नहीं निकल रही थी। केवल उन बड़ी बड़ी मशीनों की भनभनाहट ही, उनकी भयानक शक्ति की घोषणा करती हुई, हवा में गूँज रही थी।

इन्द्र देखता रहा। किसी जलती हुई भट्टी के मुख के पास रखा हुआ बर्फ का टुकड़ा पिघलने की क्रिया में जिस तरह इधर-उधर खिसकता है, उसी तरह ठोस फौलाद का वह टुकड़ा आधार का सहारा छोड़कर फिसलने लगा, दस सेकंड में छिन्न-भिन्न होकर वह राख हो गया। बनर्जी ने तुरन्त खटका दबाकर मशीन बन्द कर दी।

"मरुभूमि में पड़ी हुई भूरी मृत्यु-रेखा में यही दाग तुमने देखी थी," बनर्जी ने कहा। "यह महाविनाशी शक्ति उन सबको उस तार के द्वारा फेंकी गई थी जो शत्रु सैनिकों ने पहले फौजवालों की अपनी नकली लड़ाइयों के सिलसिले में मरुभूमि में लगाया था। ताँबा ऐसी धातु है जिस पर इसका असर देर से होता है। सोना आध घंटे में नष्ट होता है।

"केवल इसी प्रयोग से दुनिया के संहार की सम्भावना सिद्ध हो जाती है। समस्त संसार में इस तरह के तारों का एक विशाल जाल फैला हुआ है। तार भेजने के तार हैं, टेलीफोन के तार हैं, बिजली के तार हैं, रेलगाड़ी की पटरियाँ हैं। दुनिया का कोई

विकृत परमाणुओं के एक विशाल ढेर के रूप में परिणत कर देंगी और फिर पलक मारते ही वे निर्जीव परमाणु वाष्प में परिणत होकर अनन्त महाशून्य में अन्य ग्रहों के आस-पास चक्कर काटते फिरेंगे।’

अन्य धातुएँ तथा अन्य वस्तुएँ उसने उन भयानक किरणों के प्रभाव-क्षेत्र में फेंकीं। वे सब भी नष्ट होकर अदृश्य हो गईं। इन्द्र अपनी आँखें उस स्थान से बलपूर्वक हटाने की कोशिश करने लगा जहाँ उन आश्चर्यजनक प्रयोगों का प्रदर्शन हो रहा था। वह अपनी आँखें बनर्जी की तीक्ष्ण दृष्टि के क्षेत्र से हटा लेना चाहता था। अपार स्फूर्ति, विकट उत्तेजना उसके शरीर में अकस्मात् दौड़ने लगी थी, और उसे डर लग रहा था कि कहीं बनर्जी उसकी छाया उसकी आँखों में न देख ले।

दो अदृश्य हाथ बेंच के नीचे काम कर रहे थे। वे धीरे धीरे उन तारों को खोल रहे थे जिनसे इन्द्र के हाथ बंधे हुए थे। किसी को उसने नहीं देखा, किसी की आहट उसे नहीं मिली। जहाँ तक उसे ध्यान था उसके और उस पागल वैज्ञानिक के अतिरिक्त उस विशाल प्रयोगशाला में कोई अन्य व्यक्ति नहीं था, मुक्ति के समस्त मार्ग उसके लिए बन्द हो चुके थे। फिर भी इस बात में सन्देह की ज़रा सी भी गुंजाइश नहीं थी कि कोई किसी तरह उस गुप्त कंदरा में घुस आया था और बनर्जी को उसी की मांद में शिकस्त देने के प्रयत्न में लगा था। कौन हो सकता है वह?

यह ख्याल उसके पीड़ित मस्तिष्क का भ्रम नहीं है [illegible]

आज़ादी से रजनी-कुटीर में रहती है। अब भी वह बनर्जी का साथ नहीं छोड़ सकी।

तब एक विचित्र अनुमान उसके मस्तिष्क में आया और उसने तरह-तरह के प्रश्नों की झड़ी लगा दी।

किन्तु ओठों पर उँगली रखकर रजनी ने उसे चुप रहने का संकेत किया। उसकी आँखों में अपार अनुनय और चेतावनी व्यक्त थी।

"धीरे बोलो!" अति मंद स्वर में उसने कहा। "ईश्वर के लिए बहुत धीरे बोलो! कहीं ऐसा न हो कि वे तुम्हारी आवाज़ सुन लें। अगर वे मुझे तुम्हारी सहायता करते देख लेंगे, तो मेरे शरीर की धज्जियाँ उड़ा देंगे।"

"लेकिन—लेकिन—"

इन्द्र का कंठस्वर भी बिलकुल मंद हो गया।

"बिलकुल बातें मत करो," रजनी ने कहा। "समय थोड़ा है। जैसा मैं कहूँ वैसा ही करो, वर्ना जीवन भर के लिए अपाहिज बनकर यहाँ से निकलोगे। ये जानवर लाने गये हैं न?"

इन्द्र के पैरों के [illegible]।

"हाँ," इन्द्र ने उत्तर दिया। "मुझे दिखाने के लिए [illegible] जानवरों पर प्रयोग करेगा।"

"[illegible] जल्दी वापस नहीं आयेंगे। [illegible] और जानवरों [illegible] एक दूसरी गुफा में रखे हैं जो इस गुफा [illegible] और यहाँ से काफी दूर है। [illegible] से भाग [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

मुझे अपाहिज बनाकर वह मुझे संसार के सामने प्रमाण के तौर पर पेश करना चाहता है, ताकि मानव जाति समझ ले कि उसकी भी वैसी ही दशा होगी।"

"हाँ, मैंने भी सुना था। वे भी वह बात नहीं जानते जो मैं जानती हूँ। अपने विचारों में वे बुरी तरह व्यस्त हो रहे हैं और उस खतरे की ओर उनका ध्यान नहीं है जो उनके चारों ओर उमड़ रहा है। बिना उनकी इच्छा के ही संसार का संहार किसी समय भी—इसी समय भी जब हम बात कर रहे हैं—हो सकता है!"

"ओह! यह क्या कह रही हो? तुम्हारा मतलब क्या है?"

"जिन पीपों में मृत्यु-किरण संचित की जा रही है वे भर गये हैं, और वे अपने अन्दर भरी हुई शक्ति के भयानक दबाव को अब ज्यादा देर तक सह नहीं सकते। वे विस्फोट के निकट पहुँच गये हैं। दबाव अगर शीघ्र ही कम नहीं कर दिया जाता, तो उनका फट जाना अनिवार्य है। और यह बात वे नहीं जानते! अन्य बातों में वे इतने व्यस्त हैं कि [illegible] पर दृष्टि डालने की उन्हें जैसे फुर्सत ही नहीं है। [illegible]

"शायद करनी पड़े। लेकिन यह तुम क्यों पूछ रही हो? [illegible]की मृत्यु से क्या तुम्हें बड़ा दुःख होगा?"

उत्तर देने के बजाय वह भयभीत दृष्टि से उस ओर देखने लगी जिधर बनर्जी गया था।

"अब खामोश रहो!" उसने कहा, "वे आ रहे हैं। अब ठीक उसी तरह बैठ जाओ जैसे पहले बैठे थे। उस हाथ को जरा और झुका लो। अब ठीक है। सिर को इस तरह कर लो कि गर्दन पर जोर पड़ता जान पड़े। जरा और ऊपर। बस ठीक है। मेहरबानी करके ऐसी सावधानी से काम लेना कि उन्हें जरा भी शक न हो सके।"

वह बेंच के नीचे छिप गई।

गर्दन पर जोर देकर इन्द्र ने देखा कि बनर्जी चला आ रहा है। अपने हाथों में वह दो बक्स लिये हुए था। उसके जरा और पास आने पर ज्ञात हुआ कि एक तो बक्स ही है, लेकिन दूसरा लकड़ी का एक चौकोर पिंजड़ा है जो एक गज लम्बा चौड़ा है।

इन्द्र के समीप पहुँचकर उसने बक्स जमीन पर रख दिया और पिंजड़ा बेंच पर। पिंजड़े में भूरे रंग और मुलायम बालों का एक छोटा-सा जानवर बन्द था। वह गुर्रा रहा था और पिंजड़े की सीखों पर पंजे पटक रहा था।

"यह बड़ा जिद्दी और तेज जानवर है और आसानी से [illegible] में नहीं आता," बनर्जी ने कहा। "इस देश में यह नहीं पाया जाता। इसे बैजर कहते हैं। प्रयोग के लिए [illegible] [illegible] जो जानवर [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] जानवरों पर प्रयोग करता रहा हूँ, [illegible] [illegible] जानवरों की कोई [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

होगा जिनकी आत्माओं की रक्षा करने का महत्त्वपूर्ण कार्य तुम करने जा रहे हो। पशु-सम्बन्धी दूसरा प्रयोग एक पालतू जानवर से सम्बन्ध रखता है। जंगली और पालतू दोनों तरह के जानवरों पर मृत्यु-किरण का कैसा असर पड़ता है यह देख लेना तुम्हारे लिए अत्यन्त आवश्यक है। जंगली जानवर की दशा तुम देख चुके, अब पालतू जानवर का हाल देखो।"

बक्स जमीन से उठाकर उसने बेंच पर पटक दिया।

बक्स से निकली हुई एक तेज गुर्राहट इन्द्र के कानों में गूंज उठी। वह गुर्राहट उसे कुछ परिचित सी प्रतीत हुई।

"यह समझना स्वाभाविक है," बनर्जी ने कहा, "कि कुत्ता जैसा पालतू जानवर मृत्यु-किरण के सामने उतने समय तक नहीं टिक सकता जितने समय तक जंगली जानवर टिक सकता है। लेकिन मेरी राय यह है कि संहार की क्रिया इतनी शीघ्रता से होती है कि समय के फ़र्क़ का अन्दाज़ा लगाना बेकार सा हो जाता है। अभी तुम ख़ुद देखोगे और अपनी राय कायम कर सकोगे। यह एक साधारण-सा विलायती कुत्ता है। अपरिचित व्यक्तियों से यह कुछ चिढ़ता है, लेकिन इस जाति के कुत्तों की आदत ही ऐसी होती है। यह कुत्ता आज रंगभूमि में पकड़ा गया था।"

बक्स पर लिपटी हुई रस्सी खोलकर, ढक्कन हटाकर, उसने उस कुत्ते को बाहर निकाला। वह एक स्वस्थ, सुन्दर, सफ़ेद टेरि-यर था। उसकी आँखों में स्वाभाविक मस्ती थी और उसके कान ऊपर की ओर तने हुए थे।

"हार्डी!" इन्द्र अपने स्थान से चिल्ला पड़े।

शान्तिनिकेतन प्रयोगशाला में [illegible] वह अपने मालिक की ओर लपका। लेकिन उसकी गर्दन के पट्टे में एक डोर बँधी हुई थी और उस डोर का दूसरा सिरा बनर्जी के हाथ में था। [illegible] [illegible] किया। [illegible]

[illegible]साथ एक साथ देर तक कर सकना उसके लिए असम्भव हो गया।

"हार्डी !" वह चिल्लाया "हार्डी !"

तीर की तरह उछलकर हार्डी तुरन्त लड़ाई में शरीक हो गया। अपने दाँतों और पंजों से वह बनर्जी के पैरों पर वार करने लगा। और तब उसके हमलों से बचने ही में बनर्जी के पाँवों की पूरी शक्ति खर्च होने लगी। इन्द्र को यथेष्ट सहायता मिल गई।

अकस्मात बेंच के नीचे से चीख आने लगी—

"इन्द्र ! होशियार ! हथौड़ा !"

तेजी से एक ओर झुककर इन्द्र ने अपना सिर तो बचा लिया, लेकिन कंधे की रक्षा नहीं कर सका। हथौड़े की एक करारी चोट उसके कंधे पर लगी। क्रोध से उन्मत्त होकर, उसने बनर्जी के जबड़े पर फिर एक घूँसा जमाया। इस बार का घूँसा सफल रहा। बनर्जी की आँखें पथरा गईं और वह लड़खड़ाकर जमीन पर गिर पड़ा।

इन्द्र ने जेब से रिवाल्वर निकाला, और बनर्जी के माथे पर निशाना जमाया। बनर्जी का काम तमाम कर देने की इच्छा स्वाभाविक बलवती हो उठी।

पीछे की ओर फर्श पर घसिटते हुए पैरों की उसे आहट मिली और दूसरे ही क्षण रिवाल्वर उसके हाथ से बलपूर्वक छीन लिया गया।

"नहीं, नहीं—मत मारो !" बनर्जी ने हाँफते हुए कहा। "हत्या मत करो—ईश्वर के लिए इतनी हत्या मत करो !"

"अच्छा !" इन्द्र ने घूमकर [illegible] नजर से पूछा, "और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] !"

घात—"वह एक पर-पुरुष के साथ रहती है !" ओह ! कैसी चोट पहुँचाते रहे होंगे उसे ये विषपूर्ण वाक्य !

झुककर, काँपते हुए हाथों से उसने अचेत रजनी को अपनी गोद में उठा लिया। कैसी मासूम, कैसी प्यारी लग रही थी वह ! वह सर्वथा निर्दोष थी। केवल एक ही अपराध उसने किया था—अपने पागल पिता को उसने प्यार किया था, असीम मनोयोग से उसकी सेवा की थी !

बड़ी सावधानी से उसने उसे बेंच पर लिटा दिया। बड़ी मशीनें असीम भयानकता से भनभना रही थीं। बड़ी-बड़ी चर्खियाँ सरसराती हुई तेजी से घूम रही थीं। तांबे के बड़े-बड़े पीपे भरभराते हुए तीव्र गति से चक्कर काट रहे थे। लोहे के बड़े-बड़े डंडे अपने छेदों में खट-खट करते हुए आ जा रहे थे। दबी हुई हवा सेफ्टी वल्वों से फुफकारती हुई निकल रही थी और उधर से, गुफा के मुख्य द्वार से आती हुई झरने की हल्की ध्वनि मशीनों की ध्वनियों से हिल-मिलकर नृत्य कर रही थी। उन विचित्र, भयानक ध्वनियों के बीच इन्द्र निस्तब्ध, मूर्तिवत खड़ा था।

रजनी जब होश में आई तो वह इन्द्र की गोद में पड़ी थी। इन्द्र का चेहरा उसके चेहरे पर झुका था और उसकी आँखों में मधुर, स्नेहभरी कहानियाँ लिखी थीं। ऐसी कहानियाँ जो कभी पढ़ने को, सुनने को नहीं मिली थीं। रजनी ने आँखें बन्द कर लीं और धीरे-धीरे साँस लेने लगी। [illegible] के आत्म-समर्पण का मधुर भाव।

तब वह बातें करने लगा [illegible] थे। [illegible] शब्दों से [illegible] की सृष्टि करने लगे। [illegible] था।

रहो। जहाँ तक कानून का सम्बन्ध है, वहाँ तक तुम्हें इस मामले से बिलकुल बरी रखना चाहता हूँ। इसके अलावा अब यहाँ जो कुछ होना है वह मर्दों के करने का है। मशीनों के रोकने की तरकीब अगर मालूम हो जाती, तो बड़ा अच्छा होता।"

"कोई तरकीब नहीं है", रजनी ने कहा। "वे डायनेमो का काम भी करती हैं। अपने मुख्य काम के अतिरिक्त वे अपने लिए विद्युत-शक्ति भी पैदा करती जाती हैं। वे कभी रोकी ही नहीं गईं। वे चलती जायँगी, चलती जायँगी जब तक आप ही आप किसी तरह रुक न जायँगी। अनेक बार मैंने उन्हें यह बात बड़े गर्व से कहते सुनी है।"

"और तुम्हें यह भी मालूम नहीं है कि उन विशाल पीपों से, जिनमें मृत्यु-किरण बहुत अधिक सचित हो चुकी है, इन मशीनों का सम्बन्ध कैसे काटा जा सकता है?"

"मेरे खयाल में इसकी भी कोई तरकीब नहीं है। पीपे मशीनों से सीधे जुड़े हुए हैं।"

"खैर, कोई न कोई तरकीब तो निकालनी ही होगी। आज ही इस खतरे का अन्त कर देना होगा, नहीं तो—"

"नहीं तो क्या होगा इन्द्र?"

"नहीं तो कल न रजनी-कुटीर रहेगी, न तुम रहोगी, न मैं रहूँगा।"

वे झरने के सामने पहुँच गये थे।

"नमस्कार रजनी!"

"नमस्कार! कल फिर भेंट होगी।"

उसने अंधकार में धीरे से उसका हाथ दबाया। फिर इन्द्र वहाँ अकेला रह गया।

[illegible]

[illegible]

मशीन का चोंगा उसने बनर्जी के ऐंठते हुए शरीर की ओर कर दिया।

बनर्जी का रंग तुरन्त बदल गया। भय, असीम भय उसके चेहरे पर व्यक्त हो गया। विजय-गर्व का कोई चिह्न अब वहाँ बाकी नहीं था।

"बड़ी जल्दी रंग बदलते हो!" इन्द्र ने कहा।

चोंगे का मुख कुछ और झुकाकर उसने खटका दबा दिया। ज़ोर का हरा प्रकाश चोंगे से तुरन्त निकलने लगा। बनर्जी के जूतों से कुछ फ़ासले पर किरणों ने फ़र्श पर आघात किया। उस स्थान का पत्थर तुरन्त राख हो गया। तब इन्द्र ने चोंगे का मुख बनर्जी के जूते की एँड़ी की ओर कर दिया। एँड़ी तुरन्त गायब हो गई।

बनर्जी चीख-चीखकर गालियाँ देने लगा।

"अच्छा, अब तो तुम गालियों पर उतर आये!" इन्द्र ने कहा। "मेरा तो ख्याल था कि परलोक सिधारना तुम्हीं सबसे अधिक पसंद करोगे। औरों का खात्मा करने को तो बड़े उत्सुक थे। बतला दो, नहीं तो तुम्हारे पैरों की शामत आना चाहती है। मशीनों को रोकने की तरकीब क्या है?"

चोंगे को उसने ज़रा और घुमाया। जूतों के तल्ले तुरन्त उड़ गये।

"जल्दी बताओ बनर्जी," इन्द्र ने कहा, "क्यों [illegible] देर [illegible] हो।"

पागल [illegible] हो गया।

"मशीन!" वह [illegible] पड़ा, "मशीन! [illegible] हूँ।"

"[illegible] हो!"

गया वही तुरन्त राजी हो गया। तमाशा देखने की लालसा स्वीकृति की प्रेरणा तुरन्त दे देती।

टंडन ने सब लोगों को पहाड़ी के ढोंकों के पीछे छिप जाने का आदेश दिया। जब लोग छिप गये, तब पास खड़े नायब से टंडन ने धीरे से कहा—सदर को टेलीफोन किया था?

"जी हाँ हुजूर," मुंशी जी ने उत्तर दिया। "जो कुछ आपने कहा था वह सब मैंने मिस्टर खान को बतला दिया था।"

"उन्होंने क्या कहा? आदमी भेज रहे हैं न?"

"जी हाँ। उन्होंने कहा कि वे तुरन्त ही सशस्त्र सैनिकों से भरी हुई दो लारियाँ रवाना करेंगे।"

"शायद वे समय पर नहीं पहुँच सकेंगे। बाद में उनकी वैसी जरूरत भी नहीं रहेगी। हाँ, सफाई के काम में वे जरूर हाथ बँटा सकेंगे।"

"अन्दर घुसना होगा हुजूर?"

"हाँ, लेकिन अभी नहीं।"

टंटन गुफा के द्वार की ओर बढ़ा। मुंशी जी उसके पीछे चले। द्वार पर पहुँचकर कानों पर जोर देकर टंटन सुनने लगा।

सहसा किसी के पैरों से चलने की हल्की आवाज एक ओर से आने लगी। द्वार से हटकर टंटन एक ढोंके के पीछे छिप गया। मुंशी जी दूसरे ढोंके के पीछे जा छिपे।

थोड़ी देर में एक बड़ा सा लबादा ओढ़े हुए एक बूढ़ी पगली सी बाहर निकली। उसके बाल भीगे थे, जूतों में जल भरा था, लबादे से पानी की बूँदें चू रही थीं। एक बार रुककर, इधर-उधर दृष्टि दौड़ाकर, वह पेड़ों के झुरमुटों की ओर चल पड़ी।

मुंशी जी लपककर अपने ढोंके के पीछे से बाहर निकले।

दो पग आगे बढ़कर, मुंशी जी ने आवाज लगाई—सब लोग बाहर निकल आओ, अब अन्दर चलना होगा।

तुरन्त वे ढोंकों की आड़ से बाहर आने लगे। जब सब लोग जमा हो गये, तब टंडन ने कहा—मेरे पीछे-पीछे चले आओ। मेरे टार्च पर बराबर नज़र रक्खो। जब झरना आजाय, तब उस ओर कूदते जाना।

ज़रा देर में टंडन के पीछे-पीछे वे सामने की गुफा में पहुँच गये। वहाँ उसके आदेशानुसार लालटेनें और मशालें जला ली गईं। प्रकाश के गोले गुफा के फ़र्श और दीवारों पर नाचने लगे। दल आगे बढ़ा।

एक बार वे मार्ग भूल गये और उन्हें पहली गुफा में वापस आकर फिर से आगे बढ़ना पड़ा। एक बार एक स्वयंसेवक एक पत्थर में ठोकर खाकर गिर पड़ा और उसके एक पैर की हड्डी टूट गई। वह आगे बढ़ सकने के लायक नहीं रह गया। दो स्वयंसेवक उसके साथ पीछे छोड़ दिये गये। इन दुर्घटनाओं से विलम्ब होता रहा। झरने तक पहुँचने में उन्हें एक घंटा लग गया।

झरना तेज़ी से गिर रहा था। लालटेनों और मशालों का प्रकाश जल की मोटी धार पर पड़ रहा था। अगणित किरणें [illegible] में नाच रही थीं। लोग चकित थे, भयभीत थे।

कुछ स्वयंसेवकों की हिम्मत छूट गई। कूदकर उस ओर जाने का साहस वे किसी तरह नहीं कर सके। जो साहसी थे वे साहस-हीन लोगों को ढाढ़स दिलाने लगे।

टंडन रुका नहीं। [illegible] सिर पर [illegible], एक [illegible] उस ओर पहुँच गया। [illegible] कुत्तों के [illegible] उस ओर [illegible]। [illegible]

[illegible]

[आ]ता-जाता दिखाई पड़ जाता था। उसके हाथ मे एक छोटी सी [चम]की मशीन थी और उसमे लगा हुआ एक तार उसके पीछे-पीछे [ज़]मीन पर रेंगता चल रहा था। उसका चेहरा पसीने से चमक [र]हा था, क्योंकि धातुओ के रज-कणो मे परिणत होने की क्रिया [से] अत्यधिक उष्णता उत्पन्न हो रही थी। धूल उसके चेहरे और [बा]लों पर जम गई थी और उस धूमिल प्रकाश मे वह ताँबे की [ए]क मूर्ति-सा लग रहा था।

इधर-उधर वह बराबर आ-जा रहा था। जिधर ही वह घूम [ज]ाता उधर ही विस्फोट होता और धूल के नये बादल उमड [प]ड़ते। उड़ते हुए रज-कणो के परदे में एक हरे रंग का हल्का [प्र]काश, जुगनू की तरह चमकता हुआ रह-रहकर दिखाई [दे] जाता।

[स]हसा चरम-सीमा पर पहुँचे हुए अपने भयानक उन्माद की [स]म्पूर्ण शक्ति लगाकर बनर्जी ने तार के फेरे तोड़ डाले जो उनकी [क]लाइयों पर लिपटे हुए थे। उस भयानक प्रयत्न से उनका शरीर [प]त्ते की तरह काँप उठा।

हाथों के बल ज़मीन पर घिसटता हुआ वह उस बेंच की ओर [बढ़]ता जिस पर दूसरी छोटी मशीन रक्खी हुई थी। भनभनाहट [की] ध्वनि मन्द हो गई थी। [illegible] उसे देख नहीं सकता था। चलती हुई मशीनों की घनी धूल में वह छिप गया था।

"ईश्वर के लिए!" मुंशी जी चीख उठे।

उनके शब्दों ने [illegible] को सचेत कर दिया। [illegible] की [illegible] पकड़े हुए था [illegible] हो गया था। इन शब्दों ने [illegible] क्रियाशील कर दिया। धूल का [illegible] [illegible] [illegible] आगे बढ़ा।

"[illegible]!" [illegible] [illegible], "[illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] हैं।"